*Enhanced Edition
NEP 2020 Guidelines

स्वर्णिमा

हिंदी पाठ्य-पुस्तक

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

6

YBPL

स्वर्णिमा कक्षा-6

अध्याय-1

फूलों से नित हँसना सीखो

अभ्यास: (पेज 6)

मौखिक–

(क) 1. फूलों से हम हमेशा हँसना सीख सकते हैं।
2. हवा के झोंके से हम कोमलता का भाव सीख सकते हैं, यानी प्यार से अपनी बात दूसरों तक पहुँचाना।
3. सबसे प्रेम करने की सीख वर्षा की बूँदों से मिलती है।

लिखित–

1. जैसे दूध और पानी आपस में मिलते हैं, तो उन्हें अलग कर पाना संभव नहीं। ठीक इसी तरह हमें भी आपस में मिलजुलकर रहना सीखना चाहिए।
2. दुख में धीरज रखने की सीख हमें पतझड़ के मौसम में पेड़ों से मिलती है। पतझड़ के समय पेड़ों के पत्ते टूटकर अलग हो जाते हैं, फिर भी पेड़ अपनी जगह पर खड़े रहते हैं एक आशा के साथ कि इस मौसम के बीत जाने के बाद उनपर नई पत्तियाँ आएँगी। वे फिर से हरे-भरे हो जाएँगे।
3. धुएँ से हम ऊँचा सोचना तथा महत्त्वाकांक्षी होना सीख सकते हैं। हम में ऊँचा उठने / बढ़ने की चाह होनी चाहिए।
4. मेहंदी से हम सब पर अपना रंग चढ़ाना सीख सकते हैं। हमारा व्यवहार सबके साथ एक जैसा होना चाहिए। सबसे प्रेम करें ताकि हर कोई हमारे गुणों की प्रशंसा करे।

(ख) 1. (स) मछली से ✓ 2. (ब) भँवरें ✓ 3. (अ) पतझड़ के पेड़ ✓
4. (ब) सूरज की किरणों से ✓

(ग) 1. तरु – पेड़ 2. किरण – रोशनी 3. लता – बेल 4. धीरज – धैर्य
5. नित – हमेशा

भाषा ज्ञान–

(क) 1. (द) 2. (इ) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

(ख) 1. पौधे – बहुवचन 2. घडियाँ – बहुवचन 3. तितली – बहुवचन
4. लकड़ी – एकवचन
5. चींटी – एकवचन 6. बहनें – बहुवचन 7. आँखें – बहुवचन
8. गाड़ी – एकवचन

(ग) 1. मछली – मीन 2. पेड़ – तरु 3. सूरज – रवि
4. चाँद – शशि 5. फूल – कुसुम 6. हवा – समीर

रचनात्मक ज्ञान–

(क) 1. फूल – फूलों से हम वातावरण को सुगंधित तथा सुंदर बनाना सीख सकते हैं। अपने अच्छे व्यवहार से सबको खुश रखना सीख सकते हैं।
2. पर्वत – पर्वतों से हम मुसीबतों में डटकर रहना सीख सकते हैं।

(ख) हँसने से हमारा मन, शरीर व दिमाग शांत रहता है। खुलकर हँसने से शरीर में रक्त प्रवाह सही बना रहता है। हँसने से तनाव दूर होता है। जो लोग अधिक हँसते हैं, उनके मित्र भी अधिक होते हैं। हँसमुख व्यक्ति अपना काम आसानी से कर पाते हैं।

अध्याय-2

चतुर किसान – अभ्यास: (पेज 17)

मौखिक–

(क) 1. दीनू एक गरीब किसान था।

2. दीनू की ज़मीन बंजर थी।
3. दीनानाथ ने गर्व से सिर उठाकर कहा– ''बौने मदारी! मैं आज अपने बाप-दादा की धरती के रोड़े हटाने ही यहाँ आया हूँ। तुम सोच-विचारकर मेरे आड़े आना।''
4. पहली बार की खेती में खट्टनवीर ने दीनू से कहा था कि फसल के ऊपर का हिस्सा वह लेगा तथा नीचे का दीनू। दीनू ने आलू बोए और फसल तैयार होने पर, बँटवारे में दीनू को आलू मिले और खट्टनवीर को पत्तियाँ।
5. दीनू ने साझेदारी में जो भी शर्तें रखीं, उनका लाभ केवल दीनू को ही हुआ।

लिखित–

1. दीनू के पास रुपये-पैसे तो कम थे लेकिन वह बल और उत्साह का धनी था। वह भीख माँगकर खाने की जगह परिश्रम से कमाकर रूखा-सूखा खाने में विश्वास रखता था।
2. दीनू ने बंजर धरती को जोतकर खेत बनाने का निश्चय किया क्योंकि वह माँगकर खाना नहीं चाहता था। वह अपने परिश्रम के बल पर जो मिले वही खाना चाहता था।
3. दीनू से लड़ने के लिए खट्टनवीर नाम का एक हट्टा-कट्टा नाटा नट आया था।
4. दीनू की फसल खट्टनवीर चुराकर ले गया था।
5. दूसरी बार की फसल में दीनू ने गेहूँ बोए थे तथा खट्टनवीर ने इस बार नीचे की उपज माँगी थी इसलिए फसल तैयार होने पर समझौते के अनुसार दाने तो दीनू को मिले और खट्टनवीर को केवल भूसा मिला।
6. दीनू ने लाठी को अपना नया साथी बना लिया था।

(ख) 1. (ब) दीनानाथ ✓ 2. (अ) आलू ✓ 3. (ब) भूसा ✓

(ग) 1. फावड़े, कुदाल 2. पट्टन 3. वस्तु 4. आड़े
5. पड़ोस, धर्म 6. खट्टन

(घ) 1. दीनू ने नाटे नट से 2. नाटे नट ने दीनू से 3. दीनू ने खट्टनवीर से
4. दीनानाथ ने खट्टनवीर से

भाषा ज्ञान–

(क) 1. परिश्रमः सफलता की कुंजी ✓ 2. परिश्रम ✓ 3. मीठे ✓

(ख) 1. धर्म – अधर्म 2. व्यर्थ – अव्यर्थ 3. ज़मीन – आसमान
4. निश्चय – अनिश्चय 5. नायक – खलनायक

(ग) 2. हाथ लगना – (अचानक कुछ मिल जाना)– रास्ते में चलते-चलते मेरे हाथ सोने की चेन लग गई।
3. दाँत खट्टे करना – (बुरी तरह हराना) – युद्ध में भारतीय सैनिकों ने दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिए।
4. पिंड छोड़ना – (किसी को परेशान करना बंद करना) – बहुत मुश्किल से बंदरों ने हाथी का पिंड छोड़ा।
5. उल्लू बनाना – (बेवकूफ़ बनाना / मूर्ख बनाना) – रमेश आठवीं पास है लेकिन उसे उल्लू बनाना आसान नहीं है।

(घ)

	सर्वनाम	विशेषण	विशेष्य
1.	वह	गरीब	किसान
2.	उसे	बंजर	धरती
3.	यह	पुराना	पट्टन (शहर)
4.	इसके	दुष्ट	लोग
5.	मेरी	हट्टा-कट्टा	नट

(ङ) 1. संयुक्त वाक्य 2. सरल वाक्य 3. संयुक्त वाक्य
4. मिश्रित वाक्य 5. सरल वाक्य

रचनात्मक ज्ञान–

(क) 'परिश्रम का फल मीठा होता है' (उदाहरण अनुच्छेद)

जीवन के उत्थान में परिश्रम का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए श्रम ही आधार है। परिश्रम से कठिन से कठिन कार्य संपन्न किए जा सकते हैं। जो परिश्रम करता है, भाग्य भी उसी का साथ देता है। परिश्रम के कारण ही मनुष्य अपनी मंज़िल पर पहुँच जाता है। श्रम के द्वारा मनुष्य अपने आपको महान बना सकता है। हमारे सामने अनेक ऐसे महापुरुषों के उदाहरण हैं, जिन्होंने परिश्रम के बल पर असंभव को संभव कर दिखाया है। अब्राहिम लिंकन एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे पर अपनी मेहनत के बल पर झोपड़ी से निकलकर अमेरिका के राष्ट्रपति भवन तक पहुँच गए थे। जिस देश के नागरिक परिश्रम व पढ़े-लिखे होते हैं, वह देश बहुत तेज़ी से विकास व उन्नति करता है। भगवान कृष्ण ने भी गीता में यही कहा था कि कर्म करते रहो फल की इच्छा न करो। अगर आपको कुछ भी चाहिए तो आप उसके लिए परिश्रम करते रहिए। कभी न कभी आपको उसका फल मिलेगा ही। जैसे किसान दिन-रात मेहनत कर अच्छी फसल प्राप्त करते हैं। बच्चे खूब परिश्रम कर कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करते हैं।

* विद्यार्थियों को अपने विचार लिखने के लिए प्रेरित करें।

(ख) विद्यार्थी यह प्रश्न स्वयं करेंगे। (वार्तालाप)

(ग) इस कहानी का शीर्षक 'जैसी करनी, वैसी भरनी' भी हो सकता है।

अध्याय-3

अन्याय की शुरुआत

अभ्यासः (पेज 23)

मौखिक–

(क) 1. ब्राह्मणी को अपनी बेटी के विवाह की चिंता थी।
2. ब्राह्मण अपना पोथी-पतरा लेकर घर से निकल पड़ा।
3. चारों सियार देवता थे।
4. राजा ने गाय ब्राह्मण से छीन ली थी।

लिखित–

1. ब्राह्मणी, ब्राह्मण को खरी-खोटी इसलिए सुना रही थी क्योंकि ब्राह्मणी को अपनी बेटी की शादी की चिंता थी तथा उनके पास धन भी बहुत कम था।
2. ब्राह्मण ने कहा कि घोर कलियुग आ गया है। लोगों का धर्म में विश्वास नहीं है। आजकल कोई भी कथा नहीं सुनता। सारा दिन नगर में भटकने के बाद भी कोई राम-राम तक नहीं कहता है।
3. ब्राह्मण की करुण-कथा सुनकर चारों सियारों को उसपर दया आ गई और उन्होंने उसे एक चमत्कारी गाय दे दी।
4. करामाती गाय प्रतिदिन सोने की एक गिन्नी तथा मनचाहा दूध देती थी।
5. राजा ने जब गाय की विशेषताओं से प्रभावित होकर ब्राह्मण को करामाती गाय उसे देने के लिए कहा तो ब्राह्मण को अपने गुज़र-बसर की चिंता होने लगी इसलिए वह राजा के सामने गिड़गिड़ा रहा था।
6. पहला सियार आसमान को देखकर परमेश्वर के आने का इंतज़ार करने लगा।

(ख) 1. (अ) गरीब 2. (ब) पुत्री की शादी की 3. (स) तालाब के किनारे
4. (ब) गाय 5. (स) कलियुग की

(ग) 1. नहीं 2. हाँ 3. हाँ 4. हाँ 5. नहीं

(घ) 1. विश्वास 2. धनवान 3. विशेषताएँ 4. सियार 5. दुम

भाषा ज्ञान–

(क) 1. न्याय – अन्याय 2. हँसना – रोना 3. छोटा – बड़ा
4. अच्छा – बुरा 5. राजा – रंक

(ख) 1. पुत्र – पुत्री 2. ब्राह्मण – ब्राह्मणी 3. पति – पत्नी
4. लड़का – लड़की 5. देवता – देवी

(ग)

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
1. अवतरण	अव	तरण
2. अनिच्छा	अन्	इच्छा
3. अन्यथा	अन्य	था
4. उपकार	उप	कार
5. उपदेश	उप	देश

(घ) 1. न्याय – राजा ने न्याय किया।
2. परिवार – ब्राह्मण कथा सुनाकर अपने परिवार का पेट भरता था।
3. अधिकार – हमारे कुछ मौलिक अधिकार हैं, जो हमें मिलने ही चाहिए।
4. धमकी – चोर ने पुलिस को धमकी दी कि पुलिस उसे छोड़ दे।
5. दुर्लभ – हमारे देश में काले हिरण बहुत कम रह गए हैं। इनके दर्शन बहुत दुर्लभ हैं।

(ङ) 1. वह उसी तालाब के – किनारे जाकर रोने लगा।
2. सुनते ही एक सियार – आसमान की ओर देखने लगा।
3. ब्राह्मण खुशी-खुशी गाय – को घर ले आया।
4. उन्होंने ब्राह्मण से रोने – का कारण पूछा।
5. राजा तो गाय की विशेषताएँ – सुनकर वैसे ही प्रभावित था।

रचनात्मक ज्ञान–

(क) 1. भेड़, घोड़ा, बंदर, भैंस, कुत्ता, बिल्ली, ऊँट, गधा

(ख) 1. पनीर 2. खोया 3. दही 4. घी

गाय का दूध इसलिए अच्छा होता है क्योंकि इसमें कैल्शियम 200 प्रतिशत, विटामिन-ए व सी और विटामिन-डी भी होता है। गाय के दूध में प्रस्तुत विटामिन-ए हमारे चेहरे के लिए वरदान है। गाय के दूध में पाए जाने वाले प्रोटीन व विटामिन-ए हमारी त्वचा की सुंदरता को बढ़ाते हैं। छोटे बच्चों को भी पीने के लिए गाय का दूध ही दिया जाता है क्योंकि यह दूध आसानी से पच जाता है। गाय के दूध का प्रतिदिन सेवन अनेक बीमारियों को हमसे दूर रखता है। इसके दूध को पीने से हमारे दाँत भी मजबूत रहते हैं।

* विद्यार्थियों के विचार भिन्न हो सकते हैं।

अध्याय-4

अनोखा पुरस्कार

अभ्यासः (पेज 29)

मौखिक–

(क) 1. सभी पुरस्कार बहुत कीमती थे।
1. अंत में बचा हुआ सबसे कम मूल्य का पुरस्कार था– एक चाँदी की थाली।
3. अचानक दरबार में तेनालीराम ने प्रवेश किया।
4. तेनालीराम ने थाली को दुपट्टे से ढक दिया।
5. सबसे किमती पुरस्कार तेनालीराम को मिला था।

लिखित–

1. राजा कृष्णदेव राय ने युद्ध में विजय प्राप्त की थी। वे अपने सभी साथियों और सहयोगियों से बहुत खुश थे इसलिए उनके मन में सभी को पुरस्कार देने की इच्छा हुई।
2. पुरस्कार को लेकर राजा कृष्णदेव राय की शर्त थी कि सभी सदस्यों को अलग-अलग पुरस्कार लेने होंगे। एक जैसा पुरस्कार दो व्यक्तियों को नहीं मिलेगा।
3. राजा द्वारा रखे सभी पुरस्कार बहुत कीमती थे इसलिए जिसके हाथ जो पुरस्कार आया, वह उसी से संतुष्ट हो गया।

4. तेनालीराम को उत्सव में न देखकर सभी इसलिए खुश थे क्योंकि उसके लिए सबसे कम मूल्य का उपहार ही बचा था तथा सब वह पुरस्कार लेते समय तेनालीराम का उपहास उड़ाना चाहते थे।
5. तेनालीराम बहुत चतुर थे। वह खाली थाली को दुपट्टे से इसलिए ढक रहे थे ताकि राजा उनसे थाली ढकने के कारण पूछे तथा वे अपनी सूझ-बूझ से उस खाली थाली को अशर्फ़ियों से भर पाएँ।
6. सबसे बहुमूल्य पुरस्कार था राजा का रत्नजड़ित हार जो तेनालीराम को उनकी बुद्धिमत्ता एवम् चतुराई के लिए मिला था।

(ख) 1. (ब) उत्सव का 2. (ब) पुरस्कार 3. (अ) मंडप में
4. (अ) थाली खाली थी 5. (ब) तेनालीराम को

(ग) 1. विजय 2. उपस्थित 3. पुरस्कार 4. हरकत

भाषा ज्ञान–

(क) 1. युद्ध – युद्धों 2. पुरस्कार – पुरस्कारों 3. पर्दा – पर्दे
4. थाली – थालियाँ 5. पगड़ी – पगड़ियाँ 6. लोग – लोगों

(ख) 1. जिसके समान कोई दूसरा न हो – अद्वितीय / अद्‌वितीय
2. जिसे क्षमा न किया जा सके – अक्षम्य
3. जिसकी उपमा न दी जा सके – अनुपम
4. जिस पर विश्वास किया जा सके – विश्वसनीय
5. जिसकी कल्पना न की जा सके – अकल्पनीय

(ग)

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पेड़	पुस्तक
बगीचा	मोरनी
कौआ	कलम
तालाब	नदी
ऊँट	शेरनी
	पेंसिल

(घ) 1. घृणा – प्रेम 2. कीमती – सस्ता 3. प्रशंसा – निंदा
4. अंत – शुरू 5. सावधानी – असावधानी 6. अच्छा – बुरा

(ङ) 1. शर्त – राजा ने सभी सदस्यों के आगे एक शर्त रखी थी।
2. उत्सव – युद्ध जीतने की खुशी में राजा ने महल में उत्सव का आयोजन किया।
3. संतुष्ट – सभी लोग पुरस्कार पाकर संतुष्ट हो गए।
4. उपहास – सभी सभासद तेनालीराम का उपहास उड़ाना चाहते थे।
5. मस्तक – परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर मैंने अपने माता-पिता का मस्तक गर्व से ऊँचा कर दिया।

* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण कहानी

(क) बीज का घड़ा – भरत व कुमार दो मित्र थे। भरत तीर्थयात्रा पर जा रहा था इसलिए उसने एक घड़े में 5000 सोने के सिक्के रखे व उनके ऊपर बीज डाल दिए। उसने यह घड़ा अपने मित्र कुमार के पास रखवा दिया। एक साल बाद जब भरत ने कुमार से अपना घड़ा वापस लिया तो उसमें सोने के सिक्के नहीं थे बल्कि कुछ नए बीज थे। भरत ने तेनालीराम को सारी बात बताई। तेनालीराम ने कुमार से कहा कि तुमने इस घड़े में से सिक्के निकालकर नए बीज डाले हैं। कुमार नहीं माना। उसने कहा कि मैंने चोरी नहीं की है। अपनी बात को सच साबित करने के लिए तेनालीराम ने पुराने और नए बीजों को एक साथ रखकर उनका अंतर दिखाया तथा कुमार को दंड के रूप में 10,000 सिक्के देने को कहा। कुमार ने फटाफट से कहा कि घड़े में 5,000 सिक्के थे तो मैं 10,000 सिक्के क्यों दूँ? यह कहते ही कुमार की चोरी पकड़ी गई।

* विद्यार्थी कोई अन्य कहानी भी सोचकर लिख सकते हैं।

(ख) * विद्यार्थी अपने किसी एक गुण के बारे में सोचकर स्वयं लिखेंगे।

उदाहरण लेख

मैं बहुत अच्छा अभिनय करती हूँ। मेरा अभिनय देखकर ही मेरी अध्यापिका ने मुझे कई नाटकों में भाग लेने का अवसर प्रदान किया है। मैंने अपने अभिनय के द्वारा विद्यालय के वार्षिक महोत्सव में चार चाँद लगा दिए थे। मैंने पिछले वर्ष मीराबाई का पात्र प्रस्तुत किया था। जिसके लिए विद्यालय की पत्रिका में मेरे अभिनय की खूब प्रशंसा हुई थी तथा मेरी फ़ोटो भी पत्रिका में छापी गई थी।

अध्याय-5

भारत गीत

अभ्यासः (पेज 34)

मौखिक–

(क) 1. भारत को विश्व का मुकुट कहा गया है।

2. कवि ने भारत को स्वर्ग से भी ऊँचा तथा श्रेष्ठ बताया है। इसी कारण कवि ने इसे स्वर्ग का शीश बताया है। पृथ्वी की शोभा भी भारत जैसे देश के कारण ही है। यह धरती का सुंदर व मनहारी फूल है।
3. कवि के अनुसार भारतवासी सत्य, अहिंसा, सहनशीलता तथा बंधुत्व की भावना को मानते हैं तथा इनका पालन करते हैं इसलिए इन्हीं गुणों के कारण भारत पुण्य भूमि है।
4. यहाँ पावन गंगा नदी अपनी लहरों से कोमल तथा मधुर ध्वनि करती है।
5. सूर्य के प्रकाश से भारत के कोने-कोने पर चमत्कारपूर्ण प्रभाव पड़ रहा है। भारत देश अपने रूप, सौंदर्य व गुणों के कारण तेज का पुंज बन गया है।

लिखित–

1. विश्व का सौभाग्य यह है कि इस विश्व में 'भारत' जैसा एक श्रेष्ठ व ईश्वर का प्रिय देश है।
2. कवि ने सुंदर प्रकृति को नटी (कलाकार) कहा है तथा उस नटी के मस्तक पर लगा टीका हमारा देश (भारत) है।
3. कवि ने भारत देश में पाप का होना असंभव बताया है।
4. कवि कामना करता है कि हमारा देश 'भारत' युगों-युगों तक जीता रहे तथा कभी गुलाम न हो।
5. कवि ने अंतिम पंक्तियों में कहा है कि वह इस सुंदर, समृद्ध व गुणों से परिपूर्ण देश पर बलिहारी जाता है तथा कामना करता है कि यह देश ऐसे ही स्वतंत्र रहकर युगों-युगों तक कायम रहे। यह देश जीवनदायक अमृत का पान करे तथा कभी भी गुलाम न बने।

(ख) 1. (अ) भारत को ✓ 2. (ब) टीका ✓ 3. रात में चाँद ✓
4. (अ) गंगा ✓

(ग) 1. (ब) प्यारा ✓ 2. (स) लीन ✓ 3. (ब) अमृत ✓
4. (अ) थोड़ा-सा ✓ 5. (ब) ईश्वर ✓

भाषा ज्ञान–

(क) 1. प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा कवि हमें कहना चाहता है कि जब चिड़िया छोटी होती है तो उसकी समझ बहुत कम होती है। वह अंडे को ही अपना संसार समझती है यानी अभी उसने बाहरी दुनिया नहीं देखी होती इसलिए उसे वह अंडा ही संसार लगता है। जबकि संसार अंडे व घोंसले के बाहर होता है।

(ख) 1. सौभाग्य – दुर्भाग्य 2. प्रिय – अप्रिय 3. संभव – असंभव
4. स्वतंत्र – परतंत्र 5. जीवन – मृत्यु 6. जय – पराजय

(ग) 1. जगदीश – प्रभु, ईश्वर 2. पृथ्वी – धरा, धरती 3. निशि – रात, रात्रि
4. राकेश – चाँद, शशि 5. भानु – सूरज, सूर्य

रचनात्मक ज्ञान–

(क) 1. जगत – मुकुट, जगदीश दुलारा 2. स्वर्गिक शीश – फूल पृथ्वी का

3. तेज – पुंज तपवेश 4. सुललित – प्रकृति नटी का टीका

(ख) 1. भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। भारत की अनेकता में ही एकता है। यहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख, जैन, ईसाई, बौद्ध सभी धर्मों के लोग एक साथ रहते हैं।

2. भारत में अनेकों वीरों तथा महापुरुषों का जन्म हुआ था। यह भारत की प्रमुख विशेषता है।

3. भारत ने विश्व को शतरंज, साँप-सीढ़ी, शून्य, बटन, दशमलव और भी बहुत कुछ दिया है। यह भारत की विशेषता है।

* विद्यार्थी अन्य विशेषताएँ भी लिख सकते हैं।

(ग) * विद्यार्थी मैथिलीशरण गुप्त या सोहनलाल द्विवेदी जी की कोई कविता स्वयं चुनकर कक्षा में सुनाएँगे।

अध्याय-6

अनमोल पानी

अभ्यास: (पेज 41)

मौखिक–

(क) 1. जी हाँ, सिन्हा अंकल का अमन को डाँटना बिलकुल सही था। अमन पानी को बरबाद कर रहा था इसलिए अंकल ने उसे डाँटा था।

2. पेयजल की मात्रा निरंतर इसलिए घट रही है क्योंकि मीठे जल का एक बड़ा हिस्सा यानी नदियों, तालाबों और कुओं आदि का जल तरह-तरह के कीटाणुओं एवं हानिकारक रसायनों आदि द्वारा प्रदूषित हो चुका है।

3. अमन ने पेस्ट लगे ब्रश को भिगोया और नल बंद किए बिना ब्रश अपने दाँतों पर रगड़ने लगा। नल से गिर रहे पानी की आवाज़ सुनकर अंकल ने अमन को डाँटा क्योंकि पानी बेकार मे बह रहा था।

4. 'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून'– ये पंक्तियाँ रहीम जी द्वारा लिखी गई हैं। इनका अर्थ है कि पानी को संभाल कर रखें क्योंकि पानी के बिना धरती पर जीवन संभव नहीं। पूरी पृथ्वी बिना पानी के सूनी हो जाएगी क्योंकि बिना पानी के सभी जीव-जंतु मर जाएँगे।

लिखित–

1. हमारे द्वारा प्रयोग किया गया पानी दोबार ज़मीन के नीचे इसलिए नहीं जाता क्योंकि उस पानी का काफ़ी हिस्सा तुरंत वाष्प बनकर उड़ जाता है और गड्ढों में एकत्रित पानी सड़कर प्रदूषित हो जाता है।

2. जब शुद्ध पानी में रसायनिक पदार्थ मिल जाते हैं या जीवों के मरने या अन्य चीज़ों के सड़ने के कारण जीवाणु पैदा हो जाते हैं तो शुद्ध पानी प्रदूषित हो जाता है। इसे ही 'जल-प्रदूषण' कहते हैं। इसे रोकने के लिए सबसे पहले लोगों में जागरुकता लानी आवश्यक है। लोगों को पानी बरबाद करने से रोकना चाहिए। नदियों, तालाबों और झीलों में रसायन नहीं फेंकने चाहिए। शुद्ध पानी में गंदगी या जानवरों की लाशें नहीं फेकनी चाहिए।

3. पानी का रासायनिक विश्लेषण 25 जून, 1783 को फ्रांस के वैज्ञानिक 'एडाटन लारेट लेवोइज़े' ने किया था। उन्होंने बताया था कि पानी हाइड्रोजन और ऑक्सीजन गैसों से मिलकर बना है।

4. समुद्रों के किनारे बसे औद्योगिक नगरों के उद्योगों का कचरा सीधा समुद्र में गिरा दिया जाता है। बहुत से देश अपना रेडियोधर्मी कचरा भी समुद्र में डाल देते हैं। खनिजों का दोहन भी समुद्र के जल को प्रदूषित कर रहा है। इस प्रदूषण के कारण समुद्र के अंदर रहने वाले जलीय जंतुओं के जीवन के लिए भी खतर उत्पन्न हो गया है।

5. हमारी पृथ्वी पर लगभग 331 करोड़ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में जल ही फैला है, जो संपूर्ण पृथ्वी का लगभग 71 प्रतिशत हिस्सा है। इस हिस्से में हमारी नदियाँ व समुद्र आते हैं। केवल 29 प्रतिशत भाग पर ही स्थल है।

6. 'पानी' को हम 'जीवन' भी कह सकते हैं। जल के बिना हम जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। हमें तथा अन्य जीव-जंतुओं को जीवित रहने के लिए पानी की आवश्यकता है। अगर हमें पीने के लिए पानी नहीं मिलेगा तो इस धरती पर कोई भी जीवित नहीं रह पाएगा। धरती ही एक ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन है क्योंकि यहाँ पानी है। इसलिए जल ही जीवन है।

7. मैं इस कथन से पूर्णत: सहमत हूँ क्योंकि दिन-प्रतिदिन पूरे विश्व में शुद्ध पानी की कमी होती जा रही है। हमने ज़मीन के नीचे से भी बहुत-सा पानी निकाल लिया है। प्रदूषण के कारण ही पहाड़ों से बरफ़ पिघलकर समुद्र के पानी में मिल रही है इसलिए खारे पानी की मात्रा बढ़ती जा रही है और पीने लायक पानी खत्म होता जा रहा है। भविष्य में पानी की कमी ही तीसरे विश्वयुद्ध का कारण अवश्य बनेगी।

(ख) 1. (स) 79.3 ✓ 2. (अ) 70 से 90 ✓ 3. (ब) दस ✓
4. (स) ऑक्सीजन ✓ 5. (अ) 29 ✓

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✘ 5. ✓
6. ✓ 7. ✓

(घ) 1. पानी बिना हमारा जीवित – रहना संभव नहीं है।
2. पानी के अभाव में जीवन की – कल्पना भी नहीं की जा सकती।
3. समुद्र के जल में – लवण घुला होता है।
4. प्राचीन काल में तो पानी को – देवताओं का वरदान माना जाता था।
5. इतना विशाल समुद्र भला – कैसे प्रदूषित हो सकता है?

भाषा ज्ञान–

(क) 1. पुरुषवाचक (मेरी) 2. कौन – प्रश्नवाचक 3. अपने-आप – निजवाचक
4. जैसा, वैसा – संबंधवाचक 5. कहीं – अनिश्चयवाचक 6. किन्हीं – अनिश्चयवाचक

(ख) 1. <u>स्वच्छ</u> गंगा 2. <u>नई</u> कमीज़ 3. <u>ऊँचा</u> हिमालय
4. <u>परोपकारी</u> पेड़ 5. <u>समझदार</u> दादी 6. <u>विशाल</u> समुद्र

(ग) 1. पानी– जल, नीर 2. कीमती– मूल्यवान, बहुमूल्य 3. पहाड़– पर्वत, नग
4. पृथ्वी– धरा, धरती 5. गंगा– भागीरथी, सुरसरिता, विष्णुपदी

(घ) 1. धोका – (*ii*) धोखा 2. चांद – (*ii*) चाँद 3. चिन्ह – (*iv*) चिह्न
4. साधू – (*i*) साधु 5. रिषी – (*viii*) ऋषि 6. वीभिन्न – (*vii*) विभिन्न
7. व्यक्ती – (*v*) व्यक्ति 8. ऐकता – (*vi*) एकता

रचनात्मक ज्ञान–

(क) इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं आपस में चर्चा द्वारा बताएँगे।

(ख) वर्षा का जल साफ़ होता है इसलिए हमें इसे नालियों में नहीं बहने देना चाहिए अपितु विभिन्न तरीकों से इसे संचित कर इसका प्रयोग भविष्य के लिए करना चाहिए। हम बारिश के पानी को प्राकृतिक जलाश्य या कृत्रिम टैंकों में एकत्रित कर सकते हैं। छत पर इकट्ठा पानी का संचयन भी बारिश के पानी को इकट्ठा करने का एक तरीका है। कम बारिश वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए ये विधियाँ बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। इतिहास में भी राजा-महाराजा महलों में गड्ढ़ों में बारिश का पानी एकत्रित करते थे। इस एकत्रित जल का प्रयोग हम खेती में या गाड़ी धोने, टंकी साफ़ करने, घर के अंदर रखे पौधों को पानी देने या भविष्य में क्यारियों / खेतों में कर सकते हैं।

* विद्यार्थी स्वयं भी कुछ तरीके सोचकर बताएँगे।

(ग) जल है तो जीवन है

* विद्यार्थी स्वयं आठ से दस पंक्तियाँ सोचकर अपनी कार्य पुस्तिका में लिखेंगे।

1. पानी, पृथ्वी पर रहने वालों के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण पदार्थों में से एक है।
2. दुनिया में सभी जीवित जीवों के लिए पानी की आवश्यकता होती है क्योंकि पानी बिना जीवन असंभव है।
3. पेड़-पौधों के लिए भी जल अति आवश्यक है क्योंकि अगर पानी नहीं होगा तो पेड़-पौधे जीवित न रहेंगे। हमारी पृथ्वी पर हरियाली नहीं बचेगी।
4. सबसे महत्त्वपूर्ण बात, अगर हम अभी पानी का संरक्षण नहीं करेंगे तो जीवों के सभी रूप विलुप्त हो जाएँगे।
5. यह एक गैर-नवीनीकरणीय संसाधन है।

6. हर एक व्यक्ति को पानी के संरक्षण और संतुलन को बहाल करने के लिए काम करना चाहिए।
7. अगर हम पानी का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से नहीं करते तो तीसरा विश्वयुद्ध पानी के लिए ही किया जाएगा।
8. सभी देशों की सरकारों को एक साथ आकर ऐसी नीतियाँ और कानून बनाने चाहिए जो लोगों को बेवजह पानी बरबाद करने से मना करें।

अध्याय-7

उलट-पुलट

अभ्यासः (पेज 49)

मौखिक–

(क) 1. सुशील के पिता का नाम सुबल चंद्र था।
2. सुबल के पैरों में दर्द रहता था इसलिए वे बेटे को पकड़ नहीं पाते थे।
3. सुशील बहाना बनाकर मोहल्ले में हो रहे आतिशबाज़ी के प्रोग्राम में जाना चाहता था।
4. पिता-पुत्र की इच्छा परी (इच्छापरी) ने पूरी की थी।
5. सुशील को लेमन जूस की गोली इसलिए अच्छी नहीं लगी क्योंकि वह अब बच्चा नहीं रहा था वह अपने पिता की आयु जितना हो गया था।

लिखित–

1. सुबल चंद्र बेटे की शरारतों के लिए मोहल्ले के लोगों से माफ़ी माँगते थे।
2. सुबल जी ने बचपन में अपने माता-पिता की सलाह पर कभी ध्यान नहीं दिया इसलिए वे ठीक से पढ़-लिख नहीं सके। वे अपनी यह भूल सुधारना चाहते थे।
3. सुशील अपने मित्रों के साथ कबड्डी खेला करता था।
4. दोस्तों ने जब सुशील को बूढ़े के रूप में देखा तो वे डर गए। उन्हें लगा यह किसी भूत-प्रेत का चक्कर है।
5. बूढ़ा बनकर सुशील के शरीर में थकान हो गई थी। उसके घुटनों में भी दर्द होने लगा। अपने वज़न के कारण पेड़ पर न चढ़ पाया। सबने उसे लज्जित भी किया। अपनी मनपसंद गोलियाँ नहीं खा पाया व अपना प्रिय खेल कबड्डी भी नहीं खेल पाया।
6. बूढ़े सुबल बचपन में जाते ही सुशील की तरह स्कूल न जाने के बहाने बनाने लगे। कमरे में ध मा-चौकड़ी करने लगे। ढेले मारकर आनंदी बुआ की मटकी फोड़ देते।
7. सुशील बूढ़ा बनकर और सुबल बच्चा बनकर परेशान थे क्योंकि सुबल चंद्र का हाजमा ठीक नहीं था। अधिक खाना खाने पर उन्हें डकारें आतीं और वे बीमार हो जाते पर बचपन में जाते ही उन्हें बहुत भूख लगने लगी। ठीक उसी तरह सुशील हर समय दौड़-भाग करता रहता था। दूसरे गाँवों में खेल-तमाशे होते तो वहाँ भी दौड़कर पहुँच जाता पर बूढ़ा हो जाने पर ऐसा कुछ न कर पाता। अगर कभी ऐसा करता तो बीमार हो जाता।

(ख) 1. (स) मोहल्लेवाले ✓ 2. (स) दोस्तों के साथ खेलने ✓ 3. (ब) पेट दर्द ✓
4. (स) हरि ✓ 5. (स) काढ़ा ✓

(ग) 1. जब सुशील के पिता ने उसे खेलने-कूदने तथा आतिशबाज़ी के प्रोग्राम में जाने से मना किया तो सुशील ने सोचा कि यह गलत बात है। बचपन में सभी खेलते-कूदते हैं क्योंकि बच्चों को खेलना व कूदना बहुत पसंद होता है फिर भी बड़े लोग हमें खेलने से मना क्यों करते हैं? वो क्यों नहीं समझते कि इस उम्र में बच्चों को गतिविधियाँ करने का शौक होता है। उनका मन चंचल होता है तथा शरीर भी तंदरुस्त होता है।
2. जब सुशील के पिता ने उसे आतिशबाज़ी के प्रोग्राम में जाने से मना किया तथा उसे बताया कि वे उसके लिए गोलियाँ भी लाए थे जो वे सुशील के भाई को दे देंगे। तब सुशील को लगा कि उसे बहाना बनाना छोड़ देना चाहिए। उसने पिता से कहा कि उसका पेट दर्द ठीक हो गया है तथा उसे अब काढ़े की ज़रूरत नहीं है।
3. जब इच्छापरी ने बाप और बेटे की इच्छाएँ जानीं तो उसने उन्हें एक-दूसरे की उम्र में पहुँचा दिया। पर दोनों को बहुत

परेशानियाँ हुईं व अंत में उन दोनों ने अपनी-अपनी आयु में जाने की इच्छा दोबारा जताई। तब परी ने उनकी इच्छाएँ पूरी कर दीं तथा सुशील को उसका बचपन और सुबल को उनका बुढ़ापा मिल गया तथा दोनों बहुत खुश हो गए।

(घ) 1. सशील ने सैलून वाले से कहा।
2. इच्छापरी ने सुशील और सुबल से कहा।
3. इच्छापरी ने सुशील और सुबल से कहा।
4. सुशील ने अपने पिता से कहा।
5. सुशील ने सुबल चंद्र से कहा।

भाषा ज्ञान–

(क)

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
सुशील	पिता	शरारत
सुबल चंद्र	हिरन	बुढ़ापा
इच्छापरी	खेल	बचपन
रामायण	मोहल्ला	स्वाद
कबड्डी	शैतान	
	काढ़ा	

(ख) 1. बुरा 2. बाहर 3. इच्छा 4. बूढ़ा 5. अधिक

(ग) 1. मुँह 2. गाँव 3. गंजा 4. बंद 5. डाँटना

(घ) 1. मदद – सहायता 2. सपना – स्वप्न 3. बूढ़ा – वृद्ध
4. मित्र – दोस्त 5. डॉक्टर – चिकित्सक / वैद्य

रचनात्मक ज्ञान–

(क) * विद्यार्थी स्वयं बड़ी उम्र के फ़ायदे तथा नुकसान बताएँगे।

मुख्य बातें

बड़ी उम्र के फ़ायदे	बड़ी उम्र के नुकसान
1. हम अपने निर्णय स्वयं ले पाते हैं।	1. हमारा बचपन खो जाता है।
2. हम आर्थिक तथा मानसिक रूप से अधिक परिपक्व हो जाते हैं।	2. हमें सभी कार्य सोच-समझकर करने पड़ते हैं।
3. हम अपने अनुभव अन्य व्यक्तियों को बताकर उन्हें उचित सलाह दे सकते हैं।	3. हम पर अधिक ज़िम्मेदारियाँ आ जाती हैं।
4. हमारा ज्ञान दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है।	4. हमारा शरीर पहले की तरह चुस्त नहीं रह पाता।

(ख) जी हाँ, हमारे माता-पिता हमें शरारतें करने, झूठ बोलने, किसी का बुरा करने और घमंड करने से मना करते हैं। ये सभी व्यवहार अनुचित हैं तथा हमें उनकी बातें माननी चाहिए। हमें अपने से बड़ों की बात सुननी चाहिए तथा उनसे बहस नहीं करनी चाहिए।

* विद्यार्थी अपने विचार स्वयं प्रस्तुत करेंगे।

(ग) अगर कोई परी मेरी इच्छा पूरी करने के लिए कहे तो मैं उससे एक जादू की छड़ी माँगूगी ताकि मैं छड़ी घुमाकर उन सभी लोगों की सहायता कर सकूँ जो आर्थिक रूप से सक्षम नहीं है या जो बीमार हैं। मैं सभी ज़रूरतमंद लोगों की मदद करूँगी तथा उन लोगों को सबक भी सिखाऊँगी जो दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं। मैं बच्चों के लिए अधिक कार्य करना चाहूँगी। उनके लिए पार्क बनवाऊँगी, फलों के पेड़ लगवाऊँगी। अच्छे अंक मिलने पर उन्हें उपहार भी दूँगी। कम अंक आने पर उपहार तो दूँगी पर उनके मन में और अधिक अंक प्राप्त करने की लालसा उत्पन्न करूँगी। बूढ़े व्यक्तियों की सुरक्षा के उपाय भी करूँगी।

* विद्यार्थी अपनी इच्छा स्वयं बताएँगे। अध्यापिका चाहें तो बच्चों को उनकी इच्छा ए-4 शीट पर लिखने के लिए भी कह सकती हैं।

(घ)

			[1] ल				
			ड़				[4] भि
		[2] अ	क	ङ		[3] शि	खा
			प			का	री
[6] ब	च	प	न	[7] स	[8] हा	य	[10] ता
च			[9] श	रा	र	त	री
[11] ना	दा	न					फ

अध्याय-8

सच्चा दोस्त

अभ्यास: (पेज 55)

मौखिक–

(क) 1. निर्मल दूसरों की सहायता करने के लिए हमेशा आगे रहता था। वह बहुत दयालु और परोपकारी था।
2. कमल शहर के डॉक्टर के पास इसलिए नहीं जा सकता था क्योंकि उसके पास पैसे नहीं थे।
3. निर्मल ने अपने दोस्त के इलाज के लिए महाजन से पैसे कर्ज़ में लिए थे।
4. जब महाजन ने निर्मल के पिता को बताया कि निर्मल ने दोस्त के इलाज के लिए उससे 500 रुपये कर्ज़ में लिए थे तथा हफ़्ता निकल जाने पर भी उसने पैसे वापस नहीं किए हैं। यह जानने के बाद निर्मल के पिता क्रोधित हुए थे।

लिखित–

1. निर्मल के पिता बहुत कंजूस थे।
2. कमल की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय थी।
3. जब निर्मल कमल से मिलने आया तो कमल बुखार से पीड़ित था तथा पैसे न होने के कारण वह डॉक्टर से इलाज नहीं करवा पा रहा था।
4. निर्मल ने जब पिता से दोस्त के इलाज के लिए पैसे माँगे तो वह नाराज़ हो उठे और कहने लगे कि उनके पास इतना धन नहीं है कि खैरात में बाँटते फिरें।
5. निर्मल ने दोस्त के इलाज के लिए महाजन से पाँच सौ रुपये उधार लिए थे।
6. कमल को जब पूरी बात पता चली तो उसने अपने घर को महाजन के पास गिरवी रख दिया तथा पाँच सौ रुपये लाकर निर्मल के पिता को दे दिए।
7. निर्मल और कमल की दोस्ती देखकर भूषण जी में परिवर्तन आया तथा उन्होंने कंजूसी छोड़कर ज़रूरतमंदों की सहायता करनी शुरू कर दी।

(ख) 1. (अ) विपरीत ✓ 2. (अ) कमल ✓ 3. (ब) चार ✓
4. (स) महाजन ✓

(ग) 1. हाँ 2. नहीं 3. हाँ 4. हाँ 5. हाँ 6. नहीं

(घ) 1. कमल 2. अनाथ 3. फ़ायदा
4. कर्ज़ 5. मुश्किल

(ङ) 1. ठीक उसी समय – कमल वहाँ आ गया।
2. तुम्हारा कर्ज़ कभी न चुकाया – जाने वाला कर्ज़ है।
3. दोनों की सच्ची दोस्ती को देख – कर भूषण में परिवर्तन आया।
4. वह दूसरों की सहायता करने में – हमेशा आगे रहता था।
5. उसके माँ-बाप बचपन में ही गुज़र गए थे।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. उत्तम पुरुष (मेरे)– मेरे परिवार में चार सदस्य हैं।
2. मध्यम पुरुष (आपको)– मैं आपको कुछ दिखाना चाहता हूँ।
3. अन्य पुरुष (उसकी)– यह किताब उसकी है।
* विद्यार्थी अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम भी वाक्य में प्रयोग कर सकते हैं। अध्यापिका ध्यान रखें कि बच्चे केवल पुरुषवाचक सर्वनाम ही प्रयोग करें।

(ख) 1. बाल्यकाल– श्री कृष्ण बाल्यकाल से ही चमत्कार दिखाने लग गए थे।
2. सहपाठी– कमल और निर्मल सहपाठी थे।
3. अव्वल– निर्मल पढ़ाई में अव्वल आता था।
4. अनाथ– जिन बच्चों के माता-पिता नहीं होते हैं, उन्हें अनाथ कहा जाता है।
5. ऋणी– निर्मल का प्यार देखकर कमल ने कहा कि वह हमेशा उसका ऋणी रहेगा क्योंकि विपत्ति के समय निर्मल ने ही उसकी मदद की।
* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

(ग) 1. निर्धन 2. गाँव 3. अस्वस्थ
4. दुरुपयोग 5. मुश्किल

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण उपाय

(क) मैं अपने माता-पिता को अपने दोस्त के बारे में बताऊँगा तथा अपने माता-पिता को अपने दोस्त के माता-. पिता को समझाने के लिए कहूँगा कि वे उसकी पढ़ाई न छुड़ाएँ। जितनी आर्थिक मदद मेरे माता-पिता मेरे दोस्त की करना चाहें, वे उतनी करेंगे। मैं विद्यालय के प्रधानाचार्य तथा अध्यापकगणों को भी इस बारे में बताऊँगा ताकि उसकी फीस माफ़ की जा सके।
* विद्यार्थी अपनी समझ से अन्य उपाय भी लिख सकते हैं।

(ख) परिचर्चा
* विद्यार्थी स्वयं अपनी समझ से परिचर्चा में अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।
1. मानव तथा जानवरों में सबसे बड़ा फर्क यही है कि मानव के पास बुद्धि है तथा इसी बुद्धि से वह धन कमा सकता है।
2. सबसे बड़ी सेवा 'मानव सेवा' है, जो कि हमें तन, मन और धन तीनों प्रकार से करनी चाहिए।
3. अगर हमारा धन समय पर किसी के काम नहीं आ पाया तो उसका कोई फायदा नहीं।
4. ज़रूरतमंदों की मदद करने पर भी हमें सबसे प्रशंसा तथा आशीर्वाद मिलता है।
5. लोग हमें हमारे सदगुणों के लिए याद करते हैं। कंजूस व्यक्ति से कोई मित्रता नहीं करता।
6. 'मदर टैरेसा' ने अपना संपूर्ण जीवन लोगों की सेवा में लगा दिया। आज भी बहुत से ऐसे लोग हैं जो अपनी कमाई का कुछ भाग लोक सेवा में लगा देते हैं तथा इसके बदले सबसे खूब आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।
7. चैरिटेबल अस्पताल, स्कूल, अनाथालय और वृद्धाश्रम ऐसे उदाहरण हैं, जिनसे पता चलता है कि आज भी लोग धन से अधिक मानव सेवा को बल देते हैं।

अध्याय-9

अशोक का शस्त्र त्याग

अभ्यास: (पेज 63)

मौखिक–

(क) 1. कलिंग युद्ध चार साल तक चला था।
2. संवाददाता चुप इसलिए रहा क्योंकि युद्ध जीतने के बाद भी अशोक की सेना कलिंग के किले में नहीं घुस पाई थी इसलिए यह जीत, जीत नहीं थी।
3. राजकुमारी पद्मा कलिंग के महाराज की बेटी थी। उसने स्त्री सेना को अशोक की सेना से लड़ने के लिए कहा तथा कहा कि अपनी जन्म-भूमि को पराधीन न होने दें तथा लड़ते-लड़ते चाहे अपने प्राण दें पर अशोक की सेना से लोहा लें।

4. राजकुमारी पद्मा ने अशोक से कहा कि वह अपने पिता के हत्यारे से लड़ने आई है तथा जब तक वह और उसकी स्त्री सेना की वीरांगनाएँ जीवित हैं कलिंग के किले के भीतर कोई नहीं आ सकता। वह अशोक से आमने-सामने युद्ध करना चाहती है।
5. पद्मा के सामने तलवार फेंकते हुए अशोक अपने सिपाहियों को तलवारें नीचे फेंकने का आदेश देते हैं तथा कहते हैं कि आज के बाद वे उन्हें किसी पर भी आक्रमण करने की आज्ञा नहीं देंगे।

लिखित–

1. संवाददाता ने अशोक को बताया कि गुप्तचर समाचार लाया है कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए हैं।
2. कलिंग दुर्ग के फाटक न खुलने पर अशोक ने निर्णय लिया कि वह स्वयं सेना का संचालन करेंगे तथा कलिंग के किले पर मगध की पताका फहराएँगे।
3. फाटक खुलने पर अशोक और सिपाही शस्त्र सज्जित स्त्रियों की विशाल सेना तथा सबसे आगे पुरुष भेष में एक वीरांगना को देखकर चकित रह जाते हैं।
4. जब अशोक ने स्त्रियों पर शस्त्र चलाने से मना किया तो पद्मा ने अशोक से कहा कि तुमने न जाने कितने निरपराधियों की हत्या की है, अपनी विजय लालसा को पूरा करने के लिए कितनी औरतों के सिंदूर पोंछ दिए हैं, लाखों माताओं की गोद सूनी कर दी है। तुम हत्यारे हो तथा मैं अपनी बलि चढ़ाकर तुम्हारी खून की प्यास बुझाने आई हूँ। इन सभी बातों को सुनकर अशोक को आत्मग्लानि होती है तथा वह युद्ध न करने का निर्णय लेता है।
5. पद्मा ने अशोक से कहा कि शास्त्र की आज्ञा है कि तुम निरपराधियों की हत्या करो? अपनी वि. जय-लालसा पूरी करने के लिए लाखों माताओं की गोद सूनी कर दो? स्त्रियों की माँग का सिंदूर पोंछ दो? फूँक दो उस शास्त्र को जो तुम्हें यह सिखाता है। यह सब सुनकर अशोक निरुत्तर हो गए।
6. जब राजा अशोक ने प्रतिज्ञा ली कि वे कभी हथियार नहीं उठाएँगे तथा वे अपना सिर झुकाकर खड़े हो गए तब पद्मा ने उन्हें कहा कि स्त्रियाँ भी निहत्थे पर वार नहीं करेंगी इसलिए आप अपनी प्रतिज्ञा का पालने करने के लिए जीवित रहें। यह कहकर पद्मा अपनी स्त्री सेना के साथ किले के अंदर चली जाती है।
7. कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म अपना लिया। वे बौद्ध भिक्षुओं की शरण में चले गए।

(ख) 1. (स) लाखों ✓ 2. (ब) कलिंग की राजकुमारी ✓
3. (अ) शास्त्र की आज्ञा ✓ 4. (स) जनता की मृत्यु का ✓

(ग) 1. अशोक ने, संवाददाता से 2. संवाददाता ने, अशोक से 3. पद्मा ने, अशोक से
4. अशोक ने, पद्मा से 5. बौद्ध भिक्षु ने, अशोक से

(घ) 1. स्त्रियाँ भी निहत्थे पर – वार नहीं करेंगी।
2. मैं हत्यारे अशोक की – सेना से लड़ने आई हूँ।
3. मैं अपनी बलि चढ़ाकर – तुम्हारी खून की प्यास बुझाने आई हूँ।
4. उसके किसी दुर्ग पर मगध की – पताका नहीं फहरा रही है।
5. कलिंग दुर्ग के फाटक – आज भी बंद हैं?

भाषा ज्ञान–

(क) 1. महाराज – महारानी 2. पिता – माता 3. वीर – वीरांगना
4. अपराधी – अपराधिनी 5. राजकुमार – राजकुमारी 6. पुरुष – स्त्री
7. हत्यारा – हत्यारिन 8. भिक्षु – भिक्षुणी

(ख) 1. विजय – पराजय 2. अधिकार – अनाधिकार 3. पराधीन – स्वतंत्र
4. सामने – पीछे
5. दोषी – निर्दोष 6. अपराधी – निरपराधी / अनपराधी
7. अहिंसा – हिंसा 8. प्रेम – नफ़रत / घृणा

(ग) 1. लोहा लेना– साहसपूर्वक मुकाबला करना 2. मृत्यु की गोद में सोना – मर जाना
3. काम तमाम कर देना – मार डालना या अंत कर देना 4. जान पर खेलना – अपना जीवन संकट में डालना

5. आँखों में धूल झोंकना – धोखा देना

(घ) 1. सफलता – सफलतापूर्वक 2. दृढ़ता – दृढ़तापूर्वक 3. न्याय – न्यायपूर्वक
4. ध्यान – ध्यानपूर्वक

(ङ) 1. मातृ – माता– अशोक को अपनी मातृ-भूमि से प्यार था।
मात्र – केवल– मुझे मात्र दस रुपये की आवश्यकता है।
2. शस्त्र – औज़ार– युद्ध में हमें शस्त्र की ज़रूरत पड़ती है।
शास्त्र – ग्रंथ– शास्त्र हमें अनुशासन में रहना सिखाते हैं।
3. ग्रह – नक्षत्र– सौरमंडल में तरह-तरह में ग्रह हैं।
गृह – घर– मैंने अपना गृह कार्य समय पर पूर कर लिया है।
* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

(च) 1. प्रसन्नतापूर्वक ✓ 2. मातृभूमि ✓ 3. आत्मसमर्पण ✓
4. मंत्रमुग्ध ✓ 5. स्त्रियाँ ✓

रचनात्मक ज्ञान–

(क) अशोक महान द्वारा किए गए कार्य–
1. मौर्य सम्राट अशोक ने मौर्य साम्राज्य का बहुत विस्तार किया।
2. बौद्ध धर्म अपनाने के बाद अशोक ने पशु-हत्या निषेध, किसी प्राणी को हानि न पहुँचाना, माता-पिता की सेवा करना, गुरुजनों के प्रति आदर सम्मान, ब्राह्मणों, श्रमिको के साथ उचित व्यवहार करना आदि बातों पर अधिक बल दिया।
3. धर्म-प्रचार के लिए अशोक ने धर्म-विभाग की स्थापना की थी। इनका उद्देश्य राज्य में भ्रमण कर बौद्ध धर्म का प्रचार करना था।
4. अशोक ने धर्म प्रचार के लिए धर्म के सिद्धांतों तथा आदेशों को स्तम्भों और चट्टानों पर उत्कीर्ण करवाया।
5. उसने सड़कों पर वृक्ष लगवाए, कुएँ खुदवाए। मनुष्यों व पशुओं की चिकित्सा का समान रूप से प्रबंध किया।
6. अशोक सभी धर्मों का आदर करता था।
7. अशोक के सम्राट बनने पर कला की उन्नति हुई।
8. अशोक ने अशोक स्तंभ बनवाया था तथा ऐसे ही स्तंभ कई जगहों पर बनवाए थे।
9. अशोक ने ही अशोक चक्र भी बनवाया था।

उदहारण अनुच्छेद

(ख) अगर आज के समय में विश्व की सभी सरकारें युद्ध सामग्री का निर्माण करने की जगह विकास की तरफ़ ध्यान देंगी तो पूरे विश्व में सभी देश एक समान हो जाएँगे। कोई भी देश गरीब या अमीर नहीं होगा। सभी एक जैसे होंगे। पूरे विश्व में शांति ही होगी। जो पैसा हथियार बनाने में प्रयोग होता है, उससे लोगों के लिए विद्यालय, अस्पताल, कारखाने आदि बनाए जाएँ ताकि लोग बाहर न जाकर अपने देश में रहकर काम करें तथा अपने देश का नाम रोशन करें। आज के समय में भी रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध हो रहा है। इसमें कई युवा अपनी जान गँवा चुके हैं जिसके कारण इन देशों की उन्नति में अनेकों बाधाएँ आ रही हैं तथा आपस की लड़ाई के कारण इन देशों की सांस्कृतिक विरासत और आर्थिक विकास बहुत आहत हुआ है।
* विद्यार्थी अपने विचार स्वयं रखेंगे।
* विद्यार्थी स्वयं महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए आंदोलनों के बारें में जानकारी प्राप्त करेंगे।

(घ) आधुनिक समय में अहिंसा का महत्त्व
अहिंसा का सामान्य अर्थ है 'हिंसा न करना।' इसका व्यापक अर्थ है– किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन और वाणी से कोई नुकसान न पहुँचाना। मन में किसी का अहित न सोचना, किसी को कटुवाणी आदि के द्वारा भी नुकसान न देना तथा कर्म से भी किसी भी अवस्था में किसी प्राणी से हिंसा न करना ही अहिंसा है। अहिंसा को अपनाना आसान है लेकिन अहिंसा के मार्ग पर चलना कठिन है। इसके लिए मनुष्य को अपने मन और क्रोध पर नियंत्रण रखना होता है। क्रोध व्यक्ति को बहुत जल्दी हिंसा में बदल

सकता है। लेकिन अगर हम अहिंसा को अपना लें तो समाज में एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं। जिस तरह स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, मदर टेरेसा और नेल्सन मंडेला जैसे महान लोगों ने लाया था। वर्तमान समय में हिंसा बहुत तेज़ी से बढ़ रही है मनुष्य छोटी-छोटी बातों को लेकर एक-दूसरे के साथ हिंसा का प्रयोग कर रहा है। इससे देश का विकास नहीं होगा और गरीबी, बेरोजगारी बढ़ती जाएगी। इन सभी चीज़ों को कम करने के लिए ही हमें अहिंसा को अपनाना बहुत आवश्यक है। अगर देश में गृहयुद्ध होगा तो देश का विकास न होगा।

अध्याय-10

दीये का अभिमान

अभ्यास: (पेज 68)

मौखिक–

(क) 1. दीये को अपने ऊपर अभिमान हो आया था।
2. सूरज दिन में प्रकाश फैलाता है।
3. चाँद घर के अंदर का अंधकार नहीं मिटा पाता है।
4. दीया सृष्टि को अहंकार से भरी आँखों से देख रहा था।

लिखित–

1. दीया स्वयं को सूरज से महान मानता है क्योंकि सूरज केवल दिन में प्रकाश देता है पर दीया रात के समय अंधकार को खत्म कर देता है। ठीक इसी प्रकार चाँद घर के अंदर का अँधेरा नहीं मिटा सकता पर दीया घर के अंदर के कोने-कोने से अँधेरा मिटा देता है।
2. जब हवा के झोंके से दीया बुझ गया तब उसका अभिमान टूट गया।
3. अभिमान करने के दुष्परिणाम होते हैं। कोई भी अभिमानी व्यक्ति के साथ रहना पसंद नहीं करता।
4. सूरज दिन में उजाला फैलाता है और चाँद रात के समय उजाला फैलाकर आसमान में रोशनी लाता है।
5. हमें अभिमान किए बिना ही अपने काम करने चाहिए।

(ख) 1. (अ) हवा ✓ 2. (स) सूरज के ✓ 3. (अ) दीया ✓
4. (अ) अहंकार ✓

(ग) 1. प्रकाश – उजाला 2. अभिमान – घमंड 3. सदा – हमेशा
4. दुष्परिणाम – गलत नतीजा 5. जगत – दुनिया

भाषा ज्ञान–

(क) 1. अंस – कंधा
अंश – भाग
2. अनिल – हवा
अनल – आग
3. अन्न – खाने की चीज़
अन्य – दूसरा / भिन्न
4. छात्र – विद्यार्थी
क्षात्र – क्षत्रियत्व, क्षत्रीपन
5. कर्म – काम
क्रम – सिलसिला

(ख) 1. प्रकाश– उजाला, रोशनी 2. सूर्य– रवि, दिनकर, 3. चंद्र– शशि, रजनीश
4. हवा– पवन, वायु, समीर 5. अभिमान– घमंड, अहंकार

(ग) 1. कोई– तुम्हारा <u>कोई</u> भाई भी है?
2. कहाँ– आप <u>कहाँ</u> जा रहे थे?
3. क्यों– वह तुम्हें सच <u>क्यों</u> बताएगा?
4. क्या– तुम <u>क्या</u> कर रहे हो?
5. कब– तुम्हारी बहन <u>कब</u> घर आएगी?

(घ) 1. हार – माला
पराजय
2. तीर– बाण
किनारा
3. पर– पंख
लेकिन
4. फल– खाने वाला फल
परिणाम
5. उत्तर– दिशा
जवाब
6. कर– टैक्स
हाथ

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण अनुच्छेद

दीपों की यह सुंदर माला, भगाए तम और करे उजाला। 'दीपक' साधारण रूप से देखा जाए तो यह मिट्टी से बने पात्र मात्र हैं। आज के आधुनिक युग में इनका प्रचलन कम हो गया है। प्राचीनकाल में इनका प्रयोग प्रकाश करने के लिए किया जाता था, पर बिजली के अविष्कार के बाद अब ये सजावट की वस्तु के रूप में अधिक प्रयोग होते हैं। इनका प्रयोग हम धार्मिक व सामाजिक अनुष्ठानों में बहुत करते हैं। साथ ही साथ दीपावली के समय भी घर को सजाने के लिए हम दीयों का प्रयोग करते हैं क्योंकि ये बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक माने जाते हैं। दीपक हमें अँधेरे से निकालकर रोशनी की ओर बढ़ने की सलाह देता है। यह हमें शिक्षा देता है कि दूसरों के जीवन में बिना किसी मतलब के रोशनी लाएँ जैसे दीपक जलने पर हम से कुछ नहीं लेता पर अँधेरे में डूबे लोगों को रोशनी दिखाता है ताकि वे अपनी राह बना सकें

* विद्यार्थी अपने विचार स्वयं लिखेंगे।

अध्याय-11

आज़ादी

अभ्यासः (पेज 76)

मौखिक–

(क) 1. आवारा कुत्ता गाँव में रहता था।
2. आवारा कुत्ता लोगों की जूठन खाता था।
3. पेट-भर भोजन के बाद आवारा कुत्ता इधर-उधर भागने लगा, कभी पेड़ों पर बैठे पक्षियों को उड़ाता तो कभी घास चरती गायों को डराता तो कभी स्कूल से आ रहे बच्चों पर भौंकता था।
4. आवारा कुत्ता लंबी सैर के लिए शहर चला गया।
5. आवारा कुत्ते ने कोठी में एक बड़ा-सा बरामदा और उसके आगे उगी हुई हरी-हरी घास को देखा जो बिलकुल कालीन की तरह लग रही थी। यह सब देखकर आवारा कुत्ता बहुत हैरान हो गया।
6. आवारा कुत्ता शहरी कुत्ते के मुकाबले कम बलशाली था तथा आवारा कुत्ता साफ़-सुथरा भी नहीं था इसलिए शहरी कुत्ते ने उसे घृणा से देखा।
7. शहरी कुत्ते का मालिक उसे कभी-कभी ज़ंजीर से बाँध देता था। इस बात से शहरी कुत्ते को कोई हर्ज़ नहीं पड़ता था।

लिखित–

1. आवारा कुत्ते को जहाँ जगह मिलती थी वह वहाँ सो जाता था। कभी पेड़ के नीचे, कभी किसी ढाबे के बाहर या किसी तालाब के किनारे पर वह सो जाता था।
2. पेट-भर खाना न मिलने के कारण वह निढाल (परेशान) हो गया था इसलिए उसकी बुरी हालत हो गई थी।
3. एक दिन किसी शादीवाले घर के बाहर आवारा कुत्ते को बहुत सारी जूठन मिल गई थी। उस दिन उसने पेट भरकर खाना खाया था इसलिए वह बहुत खुश था।
4. आवारा कुत्ते ने शहर में मोटर-गाड़ियाँ, तरह-तरह की रोशनियाँ, होटलों के बाहर खाने के लिए बहुत सारी जूठन तथा अच्छे-अच्छे कपड़ों में मनुष्यों को देखा था।
5. शहरी कुत्ते ने आवारा कुत्ते से पूछा कि वह यहाँ कब और क्यों आया है? तथा उसने आवारा कुत्ते को शहरी जीवन के कुछ शिष्टाचार भी बताए थे।
6. शहरी कुत्ते को पेट-भर खाना मिलता था। शहरी कुत्ता साफ़-सुथरा था। उसके बाल नरम और साफ़ थे तथा उसे केवल गेट के पास बैठना होता था और अपरिचित लोगों को घर के अंदर आने से रोकना होता था।
7. शहरी कुत्ते ने आवरा कुत्ते को बताया कि शहर में जब हम किसी से मिलते जाते हैं तो पहले उस व्यक्ति से मिलने की आज्ञा लेनी होती है। उसके बाद ही उस व्यक्ति से मिलने जाना चाहिए।
8. जब शहरी कुत्ते ने आवरा कुत्ते को बताया कि मालिक उसे ज़ंजीर से बाँध कर रखता है तो आवारा

कुत्ते ने कहा कि उसे अपनी स्वतंत्रता अधिक प्रिय है। वह बंधन में नहीं रहना चाहता था इसलिए आवारा कुत्ता शहरी आराम को छोड़कर वापस चला गया।

(ख) 1. (स) दोनों ✓ 2. (स) झोपड़ियाँ ✓ 3. (ब) अपरिचितों पर भौंकना ✓
4. (ब) परतंत्रता ✓

(ग) 1. आवारा 2. आनंद 3. कुत्ता 4. स्वामी 5. करना
6. गरदन 7. स्वतंत्र

भाषा ज्ञान–

(क) 1. संतुष्ट 2. विषय 3. रोशनी 4. सम्मान
5. सिफ़ारिश 6. आश्चर्य 7. अपरिचित 8. नक्शा

(ख) 1. शहरी – ग्रामीण 2. बुरी – अच्छी 3. मैला – साफ़
4. भाग – दुर्भाग्य 5. खुशी – दुखी 6. संतुष्ट – असंतुष्ट
7. पूर्व – पश्चात्, पश्चिम 8. घृणा – प्रेम

(ग) 1. आज्ञा– आदेश, अनुमति 2. तालाब– जलाशय, पोखर, सरोवर, ताल
3. मनुष्य– मानव, इंसान 4. कपड़ा– वस्त्र, अंबर 5. स्वामी– मालिक, अधिपति

(घ) 1. ऊँट के मुँह में जीरा – आवश्यकता से बहुत कम प्राप्त होने वाली वस्तु
– संदीप पहलवानी करता है और तुमने उसे सौ ग्राम जलेबी ही खिलाई, यह हुई ऊँट के मुँह में जीरा वाली बात।

2. जान आफ़त में डालना – मुश्किल में पड़ जाना
– जब से यह दुकान ली है तब से हमारी जान आफ़त में है।

3. ईद का चाँद होना – बहुत दिनों बाद दिखाई देना
– अरे! भाई मुकेश, कहाँ रहते हो आजकल? तुम तो ईद का चाँद हो गए हो।

4. आम के आम गुठलियों के दाम – दोहरा लाभ प्राप्त होना
– तुम इस सौदे को कर लो इसमें तुम्हें आम के आम और गुठलियों के दाम भी मिलेंगे।

5. खोदा पहाड़ निकली चुहिया – कठिन परिश्रम का थोड़ा लाभ
– वह दिनभर अखबार बेचता रहा, परंतु उसे केवल बीस रुपये ही कमाई के रूप में मिले। इसे कहते हैं, खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

(ङ)

संज्ञा	विशेष्य	प्रविशेषण
1. स्वामी	1. आवारा <u>कुत्ता</u>	1. <u>एक</u> भव्य कोठी
2. गाँव	2. अच्छे <u>कपड़ों</u>	2. <u>साफ़-सुथरा</u> और बलशाली कुत्ता
3. शहर	3. हरी <u>घास</u>	3. <u>साफ़</u> और नरम बाल
4. तालाब	4. लंबी <u>सैर</u>	

रचनात्मक ज्ञान–

(क) * विद्यार्थी स्वयं अपने अनुभवों के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर देंगे।
मुख्य बिंदु
1. शहर में अधिक विद्यालय, अस्पताल, दुकानें, कारखाने आदि होते हैं।
2. शहरों में कारखाने अधिक होते हैं इसलिए लोगों के पास रोज़गार के अधिक अवसर होते हैं।
3. शहरों में लोगों की सुख-सुविधाओं के लिए अधिक चीज़ें जैसे गाड़ियाँ, रिक्शा, बस आदि होते हैं।
4. शहरों में लोगों की औसतन आय भी अधिक होती है।

(ख) * विद्यार्थी स्वयं अपने अनुभवों के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर देंगे।
मुख्य बिंदु
1. गाँव में अधिक हरियाली होती है।

2. गाँव के लोग सीधा-सादा जीवन जीते हैं।
3. गाँव में प्रदूषण कम होता है।
4. गाँव में खुले-खुले घर होते हैं।
5. गाँव के लोग अधिक परिश्रमी होते हैं। वे रात को जल्दी सोने तथा सुबह जल्दी उठने में विश्वास करते हैं।
6. गाँव के लोगों में अपनत्व का भाव अधिक होता है।

(ग) * इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं सोच-विचार कर देंगे।

1. शहरों में प्रस्तुत आधुनिक सुख-सुविधाएँ युवाओं को आकर्षित करती हैं।
2. शहरों में रोज़गार की अधिक उपलब्धता भी ग्रामीण लोगों को आकर्षित करती है।
3. शहरों में लोगों को आसानी से पानी व बिजली मिल जाती है।
4. शहरों में आय अधिक मिलती है।
5. शहरों में लोग रूढ़िवादी सोच नहीं रखते।
6. शहरों में लोग केवल खेती पर निर्भर नहीं होते।
7. शहरों में अच्छे चिकित्साल्य, विद्यालय और बड़े-बड़े कारखाने भी हैं।
8. शहरों में जाति के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता।

(घ) प्रस्तुत कहानी 'आज़ादी' से हमें यह शिक्षा मिलती है कि चाहे इंसान हो या जानवर सभी को आज़ादी बहुत प्यारी होती है। अगर हम चिड़ियों को पिंजरे में बंद कर दें तो वे चीं-चीं की आवाज़ करके स्वतंत्र होने की गुहार करती हैं। ठीक उसी प्रकार हमारे देश को भी स्वतंत्र करने के लिए लाखों लोगों ने अपने प्राण त्याग दिए क्योंकि उन्हें स्वतंत्रता का महत्त्व पता था तथा वे चाहते थे कि उनके देशवासी स्वतंत्र होकर घूमें, खाएँ और जो करना चाहें वो करें।

अध्याय-12

शक्ति और क्षमा

अभ्यास: (पेज 80)

मौखिक–

(क) 1. सुयोधन ने क्षमा, दया, तप, त्याग और मनोबल का सहारा लिया।
2. क्षमा उस सर्प को शोभा नहीं देती जो दंतहीन हो, विषरहित हो और नम्र स्वभाव का हो।
3. कौरवों ने पाँडवों को कायर इसलिए समझा क्योंकि वे (पाँडव) वीरता का प्रदर्शन करने के स्थान पर क्षमा, दया, तप, त्याग और विनम्रता जैसे मानवीय गुणों का सहारा ले रहे थे। वे शांति से समस्या का समाधान चाहते थे।
4. श्री राम ने सागर के प्रकट न होने पर अपना पुरुषार्थ दिखाया तथा अपने बाण से सागर का सीना चीर दिया। तब सागर नतमस्तक होकर उनके सामने आया तथा उसने उन्हें रास्ता लेने आ उपाय सुझाया।

लिखित–

1. इस पंक्ति का अर्थ है कि क्षमा करने जैसा गुण केवल उस भुजंग को शोभा देता है, जिसमें विष है क्योंकि उसके विष से इंसान मर सकता है। ठीक उसी प्रकार अगर शक्तिशाली व्यक्ति या बलवान व्यक्ति हमें क्षमा करे तो उस क्षमा का महत्त्व है। जो व्यक्ति बलवान नहीं है उसके द्वारा क्षमा करने का कोई महत्त्व नहीं है।
2. पाँडव, कौरवों के सामने जितने विनम्र बने कौरवों ने उन्हें उतना ही कायर समझा।
3. श्री राम को सागर पर क्रोध इसलिए आया क्योंकि वे बहुत प्यार से तीन दिन तक समुद्र के किनारे बैठकर उससे पथ माँगते रहे जब तीन दिन तक सागर ने कोई जवाब नहीं दिया तब उन्होंने अपना बाण उठाया।
4. प्रस्तुत कविता में श्री राम के दो रूपों का वर्णन किया गया है। एक रूप जब वे सागर से अनुनय-. विनय कर रहे हैं और दूसरे रूप में जब सागर कोई जवाब नहीं देता तो वे क्षमारहित हो जाते हैं तथा बल प्रयोग करते हैं।

5. कवि के अनुसार तीर में ही प्रार्थना की चमक बसती है अर्थात जिसके हाथ में तीर है उसी से प्रार्थना करने का औचित्य है।
6. जग उसी सहनशीलता, क्षमावान, दयावान व्यक्ति को पूजता है जिसमें इन तीनों गुणों के साथ-साथ बल भी होता है। जो बलहीन हो उसमें क्षमा, दया या सहनशीलता भी हो तब भी जग उसे नहीं पूजता है।

(ख) 1. (स) दुर्योधन ✓ 2. (अ) युधिष्ठिर ✓ 3. (स) तीन दिन ✓
4. (स) रामधारी सिंह 'दिनकर' ✓

(ग) 1. गरल – विष ✓ 2. भुजंग – साँप ✓ 3. मूढ़ – मूर्ख ✓
4. दर्प – घमंड ✓ 5. सिंधु – समुद्र ✓

भाषा ज्ञान–

(क) 1. अद्‌वितिय 2. ईर्ष्यालु 3. कृतज्ञ 4. दुर्गम 5. विश्वसनीय
6. निर्दोष 7. पर्वतीय / पहाड़ी

(ख)

	शब्द	विशेषण	विशेष्य
1.	नर-व्याघ्र सयोधन	नर-व्याघ्र	सुयोधन
2.	दुष्ट कौरवों	दुष्ट	कौरवों
3.	क्षमाशील रिपु	क्षमाशील	रिपु
4.	तीन दिवस	तीन	दिवस
5.	छंद अनुनय के प्यारे	प्यारे	छंद

(ग) 1. (ब) असंभव को संभव ✓ 2. (स) दुर्बलता ✓ 3. (स) शारीरिक ✓

(घ) 1. क्रम – सिलसिला– तुम्हारी गलतियों का क्रम कब तक चलता रहेगा।
कर्म – काम– भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि कर्म करते जाओ, फल की इच्छा मत करो।
2. चिर – पुराना– अपने चिर संबंधों की दुहाई मत दो।
चीर – वस्त्र– द्रौपदी का चीर हरण भारतीय समाज के लिए कलंक है।
3. ग्रह – नक्षत्र- मंगल ग्रह पर जीवन की संभावनाएँ ढूँढ़ी गई।
गृह – घर– हमने अपना गृह कार्य पूरा कर लिया है।
4. दिन – दिवस– आज का दिन बहुत शुभ है।
दीन – गरीब– गेट के बाहर एक दीन व्यक्ति बैठा है।
5. समान – एक जैसे– ये दोनों घर एक समान हैं।
सामान – चीजें– मेरा सामान मुझे दे दीजिए।

रचनात्मक ज्ञान–

(क) 'क्षमा' का अर्थ होता है, 'माफ़ करना। क्षमा का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्त्व है। अगर इंसान कोई गलती करे और अगर उसे ज्ञात हो जाए कि उसने गलती की है तो उस व्यक्ति को उसी समय माफ़ी माँग लेनी चाहिए तथा दूसरे व्यक्ति को भी मानव गुण दिखाते हुए अपराधी को क्षमा कर देना चाहिए। हम कह सकते हैं कि जिस तरह क्षमा माँगना व्यक्तित्व का एक अच्छा गुण है, उसी तरह किसी को क्षमा कर देना भी इंसान के व्यक्तित्व में चार चाँद लगाने का काम करता है। कविता 'क्षमा और शक्ति' के अनुसार केवल बलशाली मनुष्य से ही क्षमा याचना करते हैं। अधिकत्तर ऐसा ही देखा गया है। बलशाली व्यक्ति के सामने सभी क्षमा माँगने के लिए नतमस्तक होते हैं और जो व्यक्ति स्वयं बार-बार झुक जाता है, उससे कोई क्षमा नहीं माँगता।

(ख) * इस प्रश्न का उत्तर विद्‌यार्थी स्वयं लिखेंगे।

(ग) यदि मैं रामचंद्र जी के स्थान पर होती तो मैं भी पहले अनुनय-विनय करके ही पथ माँगती क्योंकि हमारी संस्कृति में हिंसा का कोई स्थान नहीं है। जहाँ तक हो पाता मैं अहिंसा का ही सहारा लेती और जैसे आखिर में मजबूर होकर रामचंद्र जी ने बाण चलाया था ठीक उसी प्रकार मैं तीर चलाने से पहले भी समुद्र से पथ के लिए आग्रह करती। अगर तब भी समुद्र पथ नहीं देता तो मैं थोड़ी-सी हिंसक हो जाती तथा रामचंद्र की तरह बाण का सहारा लेती।
* विद्‌यार्थियों के विचार भिन्न हो सकते हैं।

अध्याय-13

मदन मोहन मालवीय

अभ्यासः (पेज 87)

मौखिक–

(क) 1. असहयोग आंदोलन महात्मा गांधी जी ने उत्तर प्रदेश के चौरी-चौरा नाम स्थान पर हुई हिंसात्मक घटना को देखते हुए वापस लिया था।

2. महामना मदन मोहन मालवीय जी मालवा के मूल निवासी थे इसलिए वे 'मालवीय' कहलाए गए।

3. काशी हिंदु विश्वविद्यालय के संस्थापक वाइसराय लॉर्ड हार्डिंग थे तथा उन्होंने इस विश्व विद्यालय की स्थापना सन् 1916 में की थी।

4. मालवीय जी ने सर सुंदरलाल एवं राजा रामपाल की प्रेरणा से वकालत की पढ़ाई की थी। वे इस व्यवसाय से सोलह वर्षों तक जुड़े रहे।

5. महामना मदन मोहन मालवीय जी के पिता का नाम प. ब्रजनाथ तथा माताजी का नाम मूनादेवी था।

6. प्लेग प्रयाग में फैला था तथा मालवीय जी ने अपनी जान की परवाह किए बगैर लोगों की खूब सेवा की। इस कारण वे प्रयाग नगरपालिका के सदस्य और अध्यक्ष चुने गए।

7. जब मालवीय जी ने म्योर सेंट्रल कॉलेज, प्रयाग में प्रवेश लिया तब वे स्वामी श्रद्धानंद और मोतीलाल नेहरु जी के संपर्क में आए।

लिखित–

1. मदन मोहन मालवीय जी का जन्म 25 दिसंबर 1861 ई. में इलाहाबाद में हुआ था।

2. मदन मोहन जी ने आरंभिक शिक्षा इलाहाबाद में ही गुरु हरदेव की पाठशाला में प्राप्त की तथा उसके बाद उन्होंने अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालय में दाखिला लिया।

3. मालवीय जी ने सन् 1884 में एक संस्कृत शिक्षक के रूप में अपना अध्यापन जीवन प्रयाग में शुरू किया।

4. जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन आरंभ किया गया लेकिन उत्तर प्रदेश में चौरी-चौरा नामक स्थान की हिंसात्मक घटना के कारण उन्होंने आंदोलन वापस ले लिया तब मालवीय जी जिन निर्दोष व्यक्तियों को फाँसी की सज़ा सुनाई गई उनकी पैरवी के लिए उनके वकील बने तथा बेगुनाह लोगों को उन्होंने बचाया। इस प्रकार वे भारतीयों की प्रतिनिधि राजनीति संस्था कांग्रेस से जुड़े।

5. सन् 1928 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में खुले आम भाग लेने पर मालवीय जी छह वर्षों के लिए जेल गए थे। सन् 1932 में कांग्रेस के दिल्ली अधिवेशन में भाग लेने पर भी मालवीय जी जेल गए थे। सन् 1933 के कांग्रेस अधिवेशन से पूर्व आसनसोल के पास उन्हें गिरफ़्तार किया गया था।

6. काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए मालवीय जी ने लोगों से दान ग्रहण किया। काशी नरेश की ओर से उन्होंने भूमि दान ली। मालवीय जी हिंदी के अनन्य भक्त थे इसलिए अयोध्या सिंह उपाध्याय, डॉ. श्याम सुंदर दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि हिंदी साहित्य की महान विभूतियों ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में अपनी सेवाएँ दीं।

7. मालवीय जी का हिंदी भाषा को बहुत लगाव था। उन्होंने अपने कई भाषा हिंदी में दिए तथा अपने विश्वविद्यालय में भी हिंदी के प्रसिद्ध लेखकों व कवियों की सेवा को ग्रहण किया।

(ख) 1. (ब) कथावाचन 2. (स) आदित्य भट्टाचार्य 3. (ब) 1907
4. (अ) 12 नवंबर 1946

(ग) 1. धर्मपरायण 2. कॉलेज 3. वकीलों
4. प्रयाग 5. 1918 6. काशी नरेश

(घ) 1. सपादकं – संपादक 2. श्रदधांजली – श्रद्धांजली 3. मनोयोगपूवर्क – मनोयोगपूर्वक
4. पत्रकारीता – पत्रकारिता 5. सौलह – सोलह 6. न्ययालय – न्यायालय
7. अधीवैशन – अधिवेशन 8. अनुपसथिती – अनुपस्थिति 9. राजगुरु – राजगुरु
10. प्रेराणा – प्रेरणा

भाषा ज्ञान–

(क) 1. मनोयोग – मन: + योग 2. मनोहर – मन: + हर 3. यशोदा – यश: + दा
4. सरोवर – सर: + वर 5. मनोज – मन: + ज

(ख) 1. इलाहाबाद– इ+ल्+आ+ह्+आ+ब्+आ+द्+अ
2. स्वतंत्रता– स्+व्+अ+त्+न्+अ+त्+र्+अ+त्+आ
3. ख्याति– ख्+य+आ+त्+इ
4. प्रतियोगिता– प्+र्+अ+त्+इ+य्+ओ+ग्+इ+त्+आ
5. स्नातक– स्+न्+आ+त्+अ+क्+अ

रचनात्मक ज्ञान–

(क) * परिचर्चा विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

मुख्य बिंदु

1. मालवीय जी का मत था कि पाठ्यक्रम का आधार व्यक्ति, समाज एवं देश की आवश्यकता, संस्कृति और जीवन दर्शन होना चाहिए।
2. उन्होंने संस्कृत एवं धर्म की शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य विषय बनाने पर बल दिया।
3. मालवीय जी ने भाषाओं के समन्वय के सिद्धांत का भी समर्थन किया। वे संस्कृत भाषा का अध्ययन ज़रूरी समझते थे तथा मातृभाषा के अध्ययन पर भी ज़ोर दिया। उच्च शिक्षा के लिए अंग्रेज़ी को भी स्वीकार किया।
4. उन्होंने कलात्मक विषयों को भी स्वीकार किया।
5. उन्होंने पाठ्यक्रम में ऐसे विषयों को भी रखा जिससे विद्यार्थियों को जीविकापार्जन में सहायता मिले जैसे चिकित्सा, कानून, अध्यापन आदि।
6. उन्होंने सामाजिक विषयों-इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र आदि को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया।
7. 1904 ई. में उन्होंने शिक्षा के एक व्यापक पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की, जिसमें प्राइमरी से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक का संपूर्ण शिक्षा पाठ्यक्रम निहित था।
8. उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना करके अपने आदर्शों, मूल्यों एवम् विचारों को साकार रूप प्रदान किया।
9. उन्होंने स्त्रियों के लिए उच्च शिक्षा स्तर तक की शिक्षा की समुचित व्यवस्था की।

(ख) * विद्यार्थी पाठ के आधार पर जानकारी दे सकते हैं।

मुख्य जानकारी

1. पं. मदनमोहन मालवीय जी का जन्म 25 दिसंबर 1861 को इलाहाबाद में हुआ था।
2. उन्होंने 5 वर्ष की आयु में संस्कृत भाषा में प्रारंभिक शिक्षा लेकर प्राइमरी परीक्षा उत्तीर्ण करके इलाहाबाद के जिला स्कूल में पढ़ाई की।
3. उन्होंने छात्रवृत्ति लेकर कोलकाता विश्वविद्यालय से बी.ए. की उपाधि प्राप्त की।
4. उनका मानना था कि राष्ट्र की उन्नति तभी संभव है, जब वहाँ के निवासी सुशिक्षित हों। उन्होंने जीवनभर शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए अथक प्रयास किए।
5. वे एक बेहतरीन पत्रकार थे। उन्होंने हिंदी अंग्रेज़ी समाचार पत्र 'हिंदुस्तान' का संपादन किया। फिर 'हिंदुस्तान टाइम्स' का संपादक बनकर उन्होंने खूब ख्याति प्राप्त की।
6. वे एक कुशल वकील थे। उन्होंने महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में चलाए गए असहयोग आंदोलन मे जिन लोगों को फाँसी की सज़ा सुनाई गई उन्हें बचाया था।
7. उन्होंने कांग्रेस के कई अधिवेशनों में भाग भी लिया तथा स्वतंत्रता आंदोलनों के दौरान जेल यात्रा भी करनी पड़ी।
8. प्रयाग में जब प्लेग फैला तो उन्होंने लोगों की खूब सेवा की।
9. उन्होंने हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की। उन्होंने हिंदी को मातृभाषा के रूप में अपनाने पर बहुत ज़ोर दिया।

(ग) * विद्यार्थी यह प्रश्न स्वयं करेंगे।

अध्याय-14

बड़े भाई को पत्र

अभ्यास: (पेज 93)

मौखिक–

(क) 1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद देश सेवा हेतु अपना जीवन व्यतीत करना चाहते थे। इसी कारण उनकी मुलाकात गोपाल कृष्ण गोखले जी से हुई तथा उन्होंने राजेंद्र प्रसाद जी को 'भारत-सेवक-समाज' संस्था में सम्मिलित होने का प्रस्ताव दिया। यही बात डॉ. राजेंद्र अपने बड़े भाई को नहीं कह पाए थे।

2. लेखक ने 'भारत-सेवक-समाज' के विषय में बीस दिनों तक विचार किया था।

3. 'भारत-सेवक-समाज' का उद्देश्य भारत की सेवा के लिए राष्ट्रीय प्रचारक तैयार करना और संवैधानिक ढंगों से भारतीय जनता के सच्चे हितों को प्रोत्साहन देना था।

4. डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी की हार्दिक इच्छा देश सेवा करने की थी इसलिए वे 'भारत-सेवक-समाज' से जुड़कर देश के काम आना चाहते थे।

5. जी हाँ, यह जीवन क्षण-भंगुर ही है। हम इस संसार में जो भी पद, मर्यादा या संपत्ति कमाते हैं वे कुछ समय बाद नष्ट हो जाती हैं। जहाँ हमें हृदय की खुशी चाहिए वहाँ पैसे काम नहीं आते इसलिए गरीब आदमी कम कमाकर भी खुश है तथा अमीर आदमी सबकुछ होते हुए भी परेशान है।

6. 1. डॉ राजेंद्र प्रसाद हमारे देश के पहले राष्ट्रपति थे।
   2. वे एक स्वतंत्रता सेनानी थे।
   3. वे देश-सेवा में अपना जीवन व्यतीत करना चाहते थे।
   4. उनका रहन-सहन बहुत सादा था।
   5. डॉ. राजेंद्र प्रसाद हिंदी और अंग्रेजी के असाधारण लेखक थे।

लिखित–

1. लेखक अपने और देश के भाग्य को एक साथ मिलाना चाहते थे इसलिए वे 'भारत-सेवक-समाज' से जुड़ना चाहते थे ताकि वे अपनी आशाओं को छोड़कर देश-सेवा में अपना जीवन बिता पाएँ।
2. डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी का रहन-सहन बहुत सीधा-सादा था। उन्हें अपने आराम के लिए किसी विशेष साजों-सामान की आवश्यकता नहीं थी।
3. समाज में वे ही लोग बड़े गिने जाते हैं जिनके पास अधिक पैसे हों न कि बड़ा हृदय।
4. दरिद्रता को तुच्छ इसलिए नहीं समझना चाहिए क्योंकि सुख हमें बाहरी दिखावे या पैसे से नहीं मिलता बल्कि सुख हमारे हृदय की उपज है। गरीब आदमी कम पैसों से भी संतुष्ट रहता है और अमीर आदमी अधिक पैसा कमाकर भी संतुष्ट नहीं होता।
5. राजेंद्र प्रसाद जी ने प्रस्तुत पत्र में अपने मन के भावों को व्यक्त किया है। उन्होंने अपने बड़े भाई से देश सेवा में जुड़ने की अनुमति माँगी है। उन्होंन कहा है कि वे अपना तथा अपने परिवार का भरण-पोषण ज़्यादा अच्छे से नहीं कर पाएँगे पर वे उन्हें सामान्य जीवन ज़रूर देंगे। उनकी कमाई चाहे अधिक न होगी पर वे और उनका परिवार संतुष्ट जीवन जी पाएँगे क्योंकि वे देश-सेवा में तन, मन और धन तीनों प्रकार से लगे होंगे।
6. राजेंद्र प्रसाद जी ने अपने बड़े भाई को पत्र देश-सेवा में अपना जीवन समर्पित करने को लेकर परामर्श माँगने के उद्देश्य से लिखा था।

(ख) 1. (स) परामर्श देने के लिए 2. (स) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
3. (अ) 'भारत-सेवक-समाज' से सम्मिलित होना

(ग) 1. मैंने 2. देश 3. पद 4. मार्ग 5. भरण-पोषण
6. भाई

(घ) 1. ज़रूरत 2. आशाएँ 3. महापुरुष 4. पोषण 5. मर्यादा
6. सामाजिक 7. संतुष्ट 8. अभिप्राय 9. दरिद्रता 10. संपत्ति

भाषा ज्ञान–

(क) 1. लिखते रहे होंगे। 2. पढ़ाते रहना पड़ता है। 3. डूबती चली गई।

4. चला जा रहा है। 5. गिरकर घायल हो गया। 6. पढ़ते रहना पढ़ा।

(ख) 1. सीधा-सादा 2. आना-जाना 3. माता-पिता
4. चमक-दमक 5. धन-दौलत 6. रीति-रिवाज़
7. हँसी-खुशी 8. कभी-कभी 9. साग-सब्ज़ी
10. जादू-टोना 11. खेल-तमाशा 12. साधु-संत

* विद्यार्थी अपनी इच्छा से अन्य युग्म शब्द भी लिख सकते हैं।

(ग) 1. सजना– सजावट 2. पूजना– पूजन 3. मिलाना– मिलावट
4. बचाना– बचाव 5. उड़ना– उड़ान

(घ) 1. आदर– निरादर 2. बड़ा– छोटा 3. सुखी– दुखी
4. आशा– निराशा 5. उच्चतर– निम्नतर

(ङ) 1. आश्चर्यचकित– एलियन को देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गई।
2. अनुभव– मेरे दोस्त ने मुझे अपनी हवाई यात्रा का अनुभव खुशी-खुशी सुनाया था।
3. विश्वास– मुझे भगवान पर पूरा विश्वास है कि वे अच्छे व्यक्ति के साथ बुरा नहीं करेंगे।
4. स्वेच्छा– मेरे पिताजी स्वेच्छा से सेना से सेवानिवृत हुए।
5. सहमति– क्या वह आपकी सहमति से घर आया था?

रचनात्मक ज्ञान–

(क) डॉ. राजेंद्र प्रसाद जीवन परिचय

डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म 1884 ई. में बिहार में छपरा जिले में जीरादेयी नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम महादेव सहाय तथा माताजी का नाम कमलेश्वरी देवी था। इन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। यह सभी परीक्षाओं में प्रथम आया करते थे। 1911 से 1920 तक हाइकोर्ट में इन्होंने वकालत की। 1920 तक गांधी जी के आदर्शों व आंदोलनों ने प्रभावित होकर इन्होंने वकालत छोड़ दी और देश सेवा में लग गए। ये तीन बार कांग्रेस पार्टी के सभापति चुने गए थे। ये 1947 से 1962 तक भारत के राष्ट्रपति रहे। 1962 में इन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया। 28 फरवरी 1963 में इनकी मृत्यु हो गई।

* विद्यार्थी पुस्तकालय तथा इंटरनेट से इनके बारे में और जानकारी प्राप्त कर एक-दूसरे को बताएँगे।

(ख) विद्यार्थी विद्यालय के पुस्तकालय में से चंद्रशेखर आज़ाद जी का कोई पत्र लेकर पढ़ सकते हैं। इस प्रश्न को विद्यार्थी स्वयं करें।

(ग) पत्र (पत्र दो प्रकार के होते हैं।)

1. औपचारिक पत्र 2. अनौपचारिक पत्र

1. औपचारिक पत्र– यह पत्र हम उन्हें लिखते हैं जिनसे हमारा खून का रिश्ता या मित्रता का रिश्ता नहीं होता जैसे दफ़्तर, कार्यालय आदि में लिखे गए पत्र।
अध्यापिका, प्रधानाचार्य आदि को लिखे गए पत्र औपचारिक पत्र होते हैं।
2. अनौपचारिक पत्र– अनौपचारिक पत्र हम अपने दोस्तों, माता-पिता, रिश्तेदारों जिनके साथ हमारा खून का या मित्रता का रिश्ता हो।
औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्र लिखने का प्रारूप अलग-अलग होता है।

(घ) ए-15
विष्णु गार्डन
नई दिल्ली- 110018
दिनांक.....
आदरणीय दादाजी,
नमस्कार! मैं यहाँ सकुशल हूँ तथा आपको अच्छे स्वास्थ्य की कामना भगवान से करता हूँ। आगे समाचार यह है कि हमारे विद्यालय का वार्षिक महोत्सव अगस्त महीने की ..... दिनांक को मनाया जाएगा। इस बार मुझे अपना मनपसंद नेता बनने का अवसर प्राप्त हुआ है। आपको तो पता है कि मुझे भगत सिंह जी ने बहुत प्रभावित किया है। वे एक निडर स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने देश को आज़ादी दिलाने के लिए अपना जीवन त्याग दिया। इस बार मैं उन्हीं की कहानी उनके रूप में प्रस्तुत करूँगा।

मैं चाहता हूँ कि आप दादीजी के साथ वार्षिक महोत्सव में ज़रूर आएँ। बाकी बातें टेलीफ़ोन पर करूँगा। परिवार में सभी को मेरा प्रणाम कहना।

आपका पोता,

सिमरजीत सिंह

* अध्यापिका / अध्यापक से निवेदन है कि विद्यार्थियों को पत्र स्वयं लिखने के लिए कहें पर पहले उन्हें अनौपचारिक पत्र का प्रारुप विस्तार से अवश्य बताएँ।

अध्याय–15

मंगल की सैर

अभ्यास: (पेज 100)

मौखिक–

(क) 1. सौरमंडल में आठ ग्रह हैं।

2. 'मार्स' ग्रीक शब्द आर्स से लिया गया है, जिसका अर्थ है गॉड ऑफ़ वॉर, यानी कि युद्ध का देवता।
3. मार्स ग्रह पर पाई जाने वाली मिट्टी लाल रंग की है। यहाँ जीवन की संभावनाएँ देखी गई हैं। पृथ्वी के समान ही इसके चारों ओर भी पानी का बहाव है। मंगल ग्रह पर पानी बरफ़ के रूप में ध्रुवों पर मिलता है। मंगल ग्रह के दो चाँद हैं।
4. मंगल ग्रह के दो चाँद हैं– फोबोस और डेमोस।
5. भारत द्वारा निर्मित मंगलयान में कुल 450 करोड़ रुपयें की लागत लगी।

लिखित–

1. 'मार्स' ग्रीक शब्द आर्स से लिया गया है।
2. मंगल ग्रह पर पृथ्वी के गुरुत्व बल एक तिहाई गुरुत्व बल मौजूद है।
3. सोवियत संघ के वैज्ञानिकों ने जीवन की खोज में सर्वप्रथम 1 नवंबर, 1962 को अंतरिक्ष यान मरीनर–1 को मंगल पर रवाना किया था। पर यह प्रयास असफल रहा फिर 1965 में मरीनर–4 भेजा गया जिसने मंगल ग्रह की तसवीरें कैद कर लीं। यह पहला सफल अभियान था।
4. मरीनर–9 के मंगल ग्रह पर पहुँचने पर हमें पता चला कि मंगल पर कभी भी धूल भरे तूफ़ान उठते रहते हैं। वहाँ ज्वालामुखी और खाइयाँ भी हैं। इस सूखे ग्रह पर नदियों के तल के निशान भी थे।
5. मंगल ग्रह के दो चाँद हैं– फोबोस और डेमोस। फोबोस डेमोस से बड़ा है। फोबोस धीरे–धीरे मंगल की ओर झुक रहा है। ऐसी संभावना है कि 5 करोड़ साल में या तो यह मंगल से टकरा जाएगा या फिर टूट जाएगा।
6. मंगल का एक दिन 24 घंटे से थोड़ा अधिक होता है। यह सूरज की परिक्रमा 687 दिनों में पूरा करता है।
7. भारत का पहला मंगलयान मार्स पर 5 नवंबर 2013 को छोड़ा गया। यह यान श्री हरिकोटा अंतरिक्ष केंद्र से छोड़ा गया। यह विश्व में प्रथम प्रयास में ही सफल होने वाला मिशन था। यह सबसे सस्ता मिशन था।

(ख) 1. (ब) आर्स 2. (अ) लाल 3. (स) दोनों हो सकते हैं
4. (स) 1350 कि.ग्रा.

(ग) 1. वैज्ञानिकों 2. तापमान 3. सूर्य
4. 1965 5. खाई 6. सूर्य

(घ) 1. इसके अतिरिक्त मंगल पर भेजे – जाने वाला यह सबसे सस्ता मिशन है।
2. मंगल के पास पृथ्वी पर तरह – पोलर कैप्स है।
3. 28 नवंबर को हर साल – 'रेड प्लैनेट डे' मनाया जाता है।
4. मंगल ग्रह के दो चाँद हैं – फोबोस और डेमोस
5. मंगल का एक दिन 24 घंटे - से थोड़ा अधिक होता है।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. विशेषता– विशेष + ता 2. सौरमंडल– सौर + मंडल 3. मतभेद– मत + भेद
4. गुरुत्व– गुरु + तत्व 5. खूबसूरत– खूब + सूरत 6. अभियान– अभि + यान

(ख) 1. परिक्रमा– प्+अ+र्+इ+क्+र्+अ+म्+आ
2. ग्रह– ग्+र्+अ+ह्+अ
3. कारण– क्+आ+र्+अ+ण्+अ
4. हिस्सा– ह्+इ+स्+स्+आ
5. तात्पर्य– त्+आ+त्+प्+अ+र्+य्+अ

(ग) 1. रंग – रंगों 2. दिन – दिनों 3. यात्रा – यात्राएँ
4. नदी – नदियाँ 5. वैज्ञानिक – वैज्ञानिकों

(घ) 1. ग्रह– हमारे सौरमंडल में आठ ग्रह हैं।
2. परिक्रमा– हमारी पृथ्वी सूरज की परिक्रमा 365 या 366 दिनों में पूरी करती है।
3. अभियान– 'मार्स ऑर्बिटर मिशन' भारत का पहला मंगल अभियान था।
4. सफलता– मेहनत सफलता की कुंजी है।
5. रेगिस्तान– ऊँट को रेगिस्तान का जहाज़ कहा जाता है।
* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

(ङ) 1. पोलर कैप्स ✓ 2. जल ✓ 3. ऑक्साइड ✓

रचनात्मक ज्ञान–

(क) मंगल ग्रह –

मंगल ग्रह सौरमंडल में सूर्य से चौथा ग्रह है। इसे 'लाल ग्रह' के नाम से भी जाना जाता है। पृथ्वी के अलावा मंगल ग्रह पर जीवन की कुछ संभावना है क्योंकि यहाँ वायुमंडल के साथ-साथ बरफ़ भी है। ध रती की तरह यहाँ भी अलग-अलग गैसें पाई जाती हैं। मंगल ग्रह का वातावरण पृथ्वी की तुलना में ठंडा है।

मंगल की मिट्टी के लौह खनिज में जंग लगने की वजह से वातावरण और मिट्टी लाल दिखती है। हम धरती से मंगल ग्रह को देख सकते हैं।

* विद्यार्थियों को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें।

(ख) हमारे सौरमंडल में आठ ग्रह हैं। सूर्य से दूरी के अनुसार ये ग्रह इस प्रकार से हैं–
बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस तथा नेप्च्यून

(ग) विद्यार्थी ग्रहों से संबंधित चित्र बनाकर स्वयं लाएँगे तथा अपनी कक्षा में लगाएँगे।

(घ) सूर्य की उपयोगिता

सूर्य से हमें लाभ ही लाभ है क्योंकि सूर्य के बिना जीवन संभव नहीं है। सूर्य से ही वनस्पतियाँ अपना आहार तैयार करती हैं, जिसके खाकर अन्य जीव-जंतु जीवित रहते हैं। सुबह के समय सूर्य की रोशनी लेने से कई तरह की बीमारियाँ नष्ट होती हैं। हमें सूर्य की रोशनी से विटामिन-डी मिलता है जिससे हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। सूरज के कारण ही बादल बनते हैं जिनसे हमें पानी मिल पाता है। सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। सूरज की रोशनी के कारण की दिन और रात बनते हैं। वैज्ञानिकों ने सूरज से निकलने वाली ऊर्जा का प्रयोग कर बिजली उत्पन्न की है। सूरज आग का एक गोला है। अगर हमारी पृथ्वी को एक दिन भी सूरज का प्रकाश न मिले तो हमारी पृथ्वी बरफ़ का गोला बन जाएगी। हमें सूर्य की ऊर्जा का सही तरीके से उपयोग करके उनके प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्त करनी चाहिए।

* विद्यार्थियों को सूर्य की उपयोगिता के बारे में स्वयं बताने के लिए कहें।

अध्याय-16

बाल वर्णन

अभ्यास: (पेज 104)

मौखिक–

(क) 1. श्री कृष्ण नंद और यशोदा के पुत्र थे।

2. माँ यशोदा श्री कृष्ण को अधिक दूर खेलने जाने से मना करती है।
3. श्री कृष्ण कसम खा रहे हैं कि वह यमुना के जल में स्नान नहीं करेंगे। वह ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि यशोदा माता उन्हें यमुना नदी के पास जाने से मना कर रही हैं।
4. श्री कृष्ण ने रैता, पैता, मना, मनसुखा, दाऊ दादा आदि का नाम लिया है।
5. बाल रूप में श्री कृष्ण का रूप निराला है। वह जब घुटनों के बल चलते है तो उनके पैरों में पड़ी पैंजनिया में से रुनझुन स्वर निकलता था। वे खुद ही अपने बालों को खींचकर नैनों में आँसू ले आते थे। कभी तोतली भाषा में बोलते थे।

लिखित–

1. श्री कृष्ण नंद को बाबा और बलदाऊ को भैया कहकर पुकारते थे।
2. श्री कृष्ण की लीलाएँ देखकर गोपियो व ग्वालों को अचरज होता है। इन लीलाओं को देखकर सब लोग एक-दूसरे को बधाइयाँ दे रहे हैं।
3. इन पंक्तियों में कवि ने कहा है कि एक बार श्री कृष्ण माखन खाते-खाते रूठ गए और रोते-रोते उनके नेत्र लाल हो गए। बार-बार जम्हाई लेने लगे। फिर वे घुटनों के बल चलने लगे तो उनके पैरों में पड़ी पैंजनिया में से रुनझुन स्वर निकलते थे। घुटनों के बज चलकर ही उन्होंने सारे शरीर को ध ूल-धूसरित कर लिया है। कभी वे अपने खुद के बालों को खींचते और आँखों में आँसू भर लाते। कभी तोतली बोली बोलते तो कभी तात ही बोलते।
   सूरदास कहते हैं कि श्री कृष्ण की ऐसी शोभा को देखकर यशोदा उन्हें एक पल भी छोड़ने को तैयार नहीं हुई अर्थात् श्री कृष्ण की इन छोटी-छोटी लीलाओं में उन्हें अद्‌भुत रस आने लगा।
4. श्री कृष्ण अपने मित्रों के साथ गाय चराने जाने की ज़िद यशोदा माता से कर रहे हैं।
5. श्री कृष्ण बंसी बट के नीचे ग्वाल-ग्वालिनों के साथ खेलने की बात कर रहे हैं।
6. बालक कृष्ण अपनी माँ से खाने में भात तथा दही बाँधने की बात कर रहे हैं ताकि खेलने के बाद जब उन्हें भूख लगे तो वे इन्हें खाकर अपनी भूख मिटा पाएँ।
7. बाल स्वभाव चंचल होता है। बालकों को मित्रों के साथ खेलना अच्छा लगता है। वे अपने खुद के बाल खींचकर खुद ही रोते हैं। अगर उन्हें कुछ पसंद आ जाए तो उसे पाने की ज़िद करते हुए रोते-रोते आँखें तक लाल कर लेते हैं। वे तोतली भाषा में बोलते हैं तथा अपने मित्रों के साथ खेलने पर उन्हें असीम सुख मिलता है।

(ख) 1. (अ) बाल-कृष्ण 2. (ब) सूरदास

(ग) 1. कहन लागे मोहन मैया-मैया।
नंद महर सौं बाबा-बाबा, अरु हलधर सौं भैया।
ऊंचे चढ़ि-चढ़ि कहत जसोदा, लै-लै नाम कन्हैया।
दूरि खेलन जनिजाहु लला रे, मारैगी काहू की गैया।
गोपी ग्वाल करत कौतूहल, घर-घर बजत बधैया।
सूरदास प्रभु तुम्हरें दरस कौं, चरननि की बलि जैया।।

2. मैया हों गाइ चरावन जै हों।
तू कहि महर नंद बाबा सौं, बड़ो भयो न डरैहों।
रैता, पैता, मना, मनसुखा, हलधर संगहि रैहों।
बंसी बट पर ग्वालिन कैं संग, खेलत अति सुख पैहों।
ओदन भोजन दै दधि कॉवरि, भूख लगे ते खैहों।
सूरदास है साखि जमुन-जल सौंह देहु जु न है हौं।।

(घ) 1. मोहन – कृष्ण 2. अरुन – लाल 3. संगहि – साथ
4. साखि – साक्षी 5. कौतूहल – उत्सुकता

भाषा ज्ञान–

(क) 1. ओदन – भात 2. दरस – दर्शन 3. निमिष – आँख की पलक झपकना
4. गात – शरीर 5. तोतर – तोतली

(ख) 1. अरु – और 2. मारैगी – मारना 3. बधैया – बधाई
4. जँभात – जम्हाई 5. बोलत – बोलना

(ग) 1. दोनों अपने– अपने घर चले गए।
2. तुम्हारी कक्षा में कितने बच्चे हैं?
3. मैं मेहनत करता हूँ।
4. आन्या, रेशमा और मोहित खेल रहे हैं।

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण परिचय

(क) सूरदास– जीवन परिचय

सूरदास जी का जन्म सन् 1478 ई. में आगरा–मथुरा मार्ग पर स्थित रूनकता नाम की जगह पर हुआ था। उनके पिता का नाम पं. रामदास तथा माता का नाम जमुनादास था। विद्वानों में इनके जन्मान्ध होने के संबंध में मतभेद है। सूरदास ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए थे। इन्होंने 18 वर्ष तक एक निकटवर्ती गाँव में रहकर संगीत का अध्ययन किया। सतसंग के प्रभाव से इन्हें धर्मशास्त्रों का ज्ञान हो गया। इनके गुरु का नाम वल्लभाचार्य था। सूरदास जी अष्टछाप के सर्वश्रेष्ट कवि थे। इनकी मृत्यु पारसौली ग्राम में 1583 ई. लगभग हो हुई थी। इनकी प्रमुख रचनाएँ– सूरसागर, सूरसारावली, भगवत, नागलीला, गोवर्धन लीला, सूरपचीसी, साहित्य लहरी है। इन्होंने बाल कृष्ण की लीलाओं का अद्‌भुत वर्णन अपनी रचनाओं में किया है।

* विद्यार्थियों को सूरदास जी का जीवन परिचय कंठस्थ कर स्वयं लिखने के लिए कहें।

उदाहरण घटना–क्रम

(ख) 1. जब कंस को पता चला कि वसुदेव और देवकी की संतान ही उनकी मृत्यु का कारण होगी तो कंस न वसुदेव व देवकी को जेल में बंद कर दिया। कंस उनकी संतान के पैदा होते ही उन्हें मार डालता था।
2. जब कृष्ण जी का जन्म हुआ तो जेल के सभी सैनिक गहरी नींद में सो गए।
3. तभी जेल के दरवाज़े स्वत: ही खुल गए। उस समय भारी बारिश हो रही थी।
4. उस बारिश में ही वसुदेव ने नन्हें कृष्ण को एक टोकरी में रखा व जेल से बाहर निकल आए।
5. कुछ दूरी पर ही यमुना नदी थी। वसुदेव को यमुना पार जाना था। तभी चमत्कार हुआ। यमुना के जल ने भगवान के चरण छुए और फिर उसका जल दो हिस्सों में बँट गया।
6. फिर वसुदेव श्री कृष्ण जी को यमुना के उस पार गोकुल में अपने मित्र नंदगोप के यहाँ ले गए।

* विद्यार्थी श्री कृष्ण जी के जन्म से लेकर ब्रज–आगमन तक के घटनाक्रम की जानकारी स्वयं प्राप्त कर कक्षा में सुनाएँगे।

अध्याय–17

आप भले तो जग भला

अभ्यास: (पेज 111)

मौखिक–

(क) 1. काँच के महल में कुत्तों को काँच के टुकड़ों में अपने जैसे हज़ारों कुत्ते दिखाई दिए।
2. दोनों कुत्तों के स्वभाव में बहुत अंतर था। एक कुत्ता अपनी शान दिखाने के लिए दूसरे कुत्तों पर भौंकता है तथा उसे अपनी ही प्रध्विनि सुनाई पड़ी। वहीं दूसरी तरफ़ दूसरा कुत्ता अपनी दुम हिलाता है तो बाकि कुत्ते भी प्यार से उसकी तरफ़ अपनी दुम हिलाते हैं।
3. लेखक के अनुसार यह दुनिया काँच के महल के जैसी है। अपने स्वभाव की छाया ही आप पर पड़ती है। ''आप भले तो जग भला,'' ''आप बुरे तो जग बुरा।''
4. लेखक ने अपने मित्रों की यह खास गलती बताई है कि वे दूसरों का दृष्टिकोण समझने की कोशिश नहीं करते। वे दूसरों के विचारों की, कामों की, भावनाओं की आलोचना करना ही अपना परम धर्म समझते हैं।
5. बापू जी लोगों की आलोचना हँसकर, मीठी चुटकियाँ लेकर और अपना प्रेम दिखाकर करते थे।
6. अमेरिकी लेखक इमर्सन को गायें पालने का शौक था।

लिखिए–

1. अब्राहम लिंकन ने अपनी सफलता का रहस्य यह बताया कि वे दूसरों की अनावश्यक नुक्ताचीनी कर उनका दिल नहीं दुखाते थे। उन्हें दोस्त बनाकर वे उन्हें अपना दुश्मन नहीं बनने देते।
2. लेखक के अनुसार अगर हम अपने को ही सुधारने का प्रयत्न करें और दूसरों के अवगुणों पर टीक. ा-टिप्पणी करना बंद कर दें तो हमारा जीवन सुखी हो सकता है।
3. अगर निंदक हमारा ध्यान त्रुटियों की ओर खींचता है तो उन अवगुणों को दूर करना हमारा कर्तव्य है। जिसने हमारा ध्यान उन त्रुटियों की ओर दिलाया, हमें उसका उपकार मानना चाहिए।
4. गांधी जी ने सरदार पृथ्वी सिंह को आश्रम में रहने के लिए इसलिए कहा क्योंकि गांधी जी का आश्रम एक प्रयोगशाला जैसा था। तथा वे यह देखना चाहते थे कि सरदार पृथ्वी सिंह जी ने सच में अहिंसा का पाठ सीख लिया है या नहीं।
5. बूढ़ी नौकरानी ने बछड़े के प्रति प्रेम का भाव दिखाया। उसने बहुत प्यार से बछड़े के मुँह में अँगूठा डाला तथा उसे झोपड़ी के पास ले गई। बछड़ा चुपचाप अंदर चला गया। इससे पता चलता है कि जानवर भी प्रेम की भाषा समझते हैं।
6. लेखक के मित्र का रसोइया बिना बताए इसलिए चला गया क्योंकि जब खाना सही नहीं बनता था तब लेखक का मित्र उसे खूब बुरा-भला कहता पर जिस दिन वे अच्छा खाना बनाता तब उसकी कोई प्रशंसा नहीं की जाती थी। इस वजह से रसोइया नौकरी छोड़कर भाग गया।

(ख) 1. (ब) काँच का ✔ 2. (अ) भला ✔ 3. (स) आसान ✔ 4. (ब) गायें ✔

(ग) 1. सुधारने 2. गलतियाँ 3. आसान 4. भौंकते 5. दृष्टिकोण

(घ) 1. प्रस्तुत वाक्य के अनुसार शहद की एक बूँद से तात्पर्य है लोगों की गलतियाँ तथा एक सेर-ज़हर का अर्थ है लोगों की अच्छाइयाँ, जिनकी तरफ़ लोगों का ध्यान नहीं जाता। जिस प्रकार मक्खियाँ शहद की एक बूँद पर झपट पड़ती हैं, ठीक उसी प्रकार आलोचकों के लिए दूसरों की आलोचना करने के लिए एक गलती ही काफ़ी है। वे दूसरों के अच्छे गुणों पर ध्यान न देकर बस उनकी एक गलती पर पूरा ध्यान एकत्रित कर लेते हैं।

2. प्रस्तुत वाक्य के अनुसार धरती पर कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जो त्रुटियाँ न करता हो। पर यह हम लोगों की फितरत है कि हम दूसरों की त्रुटियों को बहुत गौर से देखते हैं। उन्हें उनकी त्रुटियों के लिए खूब सुनाते हैं। परंतु अपनी त्रुटियों पर कोई ध्यान नहीं देते। चाहे, हमारी गलतियाँ उनसे अधिक ही क्यों न हो, पर हम अपनी गलतियों पर ध्यान नहीं देते।

3. प्रस्तुत वाक्य के अनुसार हमें अपने बर्ताव पर बहुत ध्यान देना चाहिए। अगर हम हमेशा दूसरों में गलतियाँ ढूँढ़ेंगे तथा उनकी गलतियों के लिए उनसे बुरा बर्ताव करेंगे तो वे भी हमसे अच्छा बर्ताव नहीं करेंगे तथा आपसे गुस्से में ही बात करेगा। हमें चाहिए कि हम प्रेमपूर्वक दूसरे व्यक्ति को उसकी गलतियाँ बताएँ।

(ङ)
1. पर, उनसे यह कहने – का साहस कौन करे?
2. आगे भला मैं वही – यंत्र नहीं बन सकता।
3. वे दूसरों का दृष्टिकोण – समझने की कोशिश नहीं करते।
4. बेचारा कुछ रूपयें का नौकर – गलती क्यों करने लगा?
5. दूसरे लोग जो उनका सम्मान – नहीं करते, मूर्ख हैं।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. रोता – अकर्मक 2. खेलता – सकर्मक 3. हँस रही – अकर्मक
4. पढ़ती – सकर्मक

(ख) 1. विशाल ✗ 2. उधर, शान ✗ 3. भौंका ✗
4. हमेशा ✗ 5. आप ✗

(ग) 1. अशिष्टता 2. प्रसन्नता 3. सफलता
4. महानता 5. कटुता

(घ) 1. आगे – पीछे 2. इधर – उधर 3. संतोष – असंतोष

4. दाएँ – बाएँ 5. परीक्षक – परीक्षार्थी

(ङ) 1. पढ़ना – पढ़ाइ 2. सफल – असफल 3. मूर्ख – मूर्खता
4. महान – महानता 5. प्रसन्न – प्रसन्नता

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण विचार

(क) 1. उसकी बातों पर विचार करके अपनी बुराई दूर करेंगे।

(ख) दूसरों द्वारा की गई निंदा हमारे लिए बहुत लाभदायक है क्योंकि जब कोई हमारी निंदा करता है तो हमें अपनी गलतियों का पता चलता है तथा इन गलतियों या कमियों को सुधारकर हम एक अच्छे व्यक्तित्व को पा सकते हैं। बहुत बार ऐसा होता है कि हम सोचते हैं कि हम में कोई कमी नहीं है परंतु ध रती पर ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसमें कोई कमी न हो इसलिए अगर कोई किसी बात पर हमारी निंदा करता है तो उसे सकारात्मक रूप में ले तथा अगर हमारी वह बात सच में गलत है तो उसे दोबारा न दोहराएँ।

(ग) ''जो मनुष्य मूर्ख है..... वह सबसे बड़ा मूर्ख है।

उदाहरण अर्थ

सुकरात के इस कथन का यह आशय है कि जिस व्यक्ति में कोई कमी है तथा उस व्यक्ति को अपनी कमी के बारे में पता है तो वह व्यक्ति ज्ञानी है क्योंकि वह अपनी उस कमी को दूसरों के सामने आने ही नहीं देगा। पर अगर कोई व्यक्ति मूर्ख है या अगर किसी में कोई कमी है तथा उसे अपनी उस कमी के बारे में नहीं पता तो वह बार-बार अपनी उस कमी को सभी के साामने प्रस्तुत होने देगा इसलिए वह सबसे बड़ा मूर्ख है। अर्थात अपने दोषों से अनभिज्ञ न रहें, उन्हें पहचानें व समय रहते अपने दोषों और बुरी आदतों को बदल दें।

* विद्यार्थी को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें।

(घ) अब्राहम लिंकन अमेरिका के 16 राष्ट्रपति थे। वे एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे। उन्होंने अपनी शिक्षा पड़ोसियों तथा अपनी माँ द्वारा दी गई पुस्तकों की मदद से पूरी की। उन्होंने दास प्रथा खत्म की। उनकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य था कि उन्होंने कभी दूसरों की नुक्ताचीनी नहीं की तथा खुद को सक्षम बनाने पर ध्यान दिया। अपना तथा अपने परिवार का पेट पालने के लिए लिंकन ने खेतों में मज़दूरी की।

* विद्यार्थी अब्राहम लिंकन के बारे में स्वयं जानकारी प्राप्त कर लिखेंगे।

अध्याय-18

वरदान माँगूँगा नहीं

अभ्यास: (पेज 121)

मौखिक–

(क) 1. इस कविता में कवि दया की भीख, विश्व की संपत्ति, कोई वरदान और कर्तव्य पथ से भागना। कवि ये सब नहीं करना चाहता।
2. कवि के अनुसार जीवन एक महान संग्राम है।
3. तिल-तिल मिटकर भी कवि दया की भीख नहीं लेना चाहता है।
4. कवि कहता है कि जो लोग जीवन संघर्ष में विजयी होकर महान बन गए हैं, वे अपनी महानता बनाए रखें। कवि को अपने छोटे होने के भव में जीने दें क्योंकि उसे अपनी इस वेदना से लगाव है तथा वह इसे त्यागना नहीं चाहता।

लिखित–

1. कवि विश्व की संपत्ति मिलने पर भी अपने यादगार समय को, अपने घर को, अपनी टूटी-फूटी हालत को नहीं छोड़ना चाहता।
2. संघर्ष के पथ पर चलते समय कवि हार और जीत दोनों को ही सही मानता है। वह कहता है कि अगर संघर्ष करते हुए मुझे हार मिली तो वह भी सही और अगर जीत गया तो वह भी सही।
3. कवि अपनी लघुता को इसलिए बचाकर रखना चाहता है क्योंकि उसे उसी में आत्मसंतोष मिल रहा है। वह महान नहीं बनना चाहता। उसे अपने हृदय की वेदना से प्यार है।

4. कर्तव्य पथ पर चलने के लिए कवि अपनी तकलीफ़ें और दूसरों की बद्दुआएँ तक सहने के लिए तैयार है।

(ख) 1. (स) एक विराम ✓ 2. (स) दया की ✓ 3. (स) हाय या जीत से ✓
4. (अ) लघुता ✓

(ग) 1. भयभीत– डरा हुआ 2. किंचित्– ज़रा भी 3. ताप– जलन
4. संग्राम– संघर्ष 5. वेदना– पीड़ा

भाषा ज्ञान

(क) 1. हार – पराजय– क्रिकेट मैच में पाकिस्तान को हार का सामना करना पड़ा।
माला– मैंने अपनी माँ के लिए सोने का हार खरीदा।
2. कर – टैक्स– हमें कर देना चाहिए।
हाथ– उसने अपने कर कमलों से दान किया।
करना– मैंने अपना कार्य कर लिया है।

(ख) 1. जीवन – मृत्यु 2. वरदान – अभिशाप 3. सुखद – दुखद
4. भयभीत – निर्भीक 5. सही – गलत 6. सत्मार्ग – कुमार्ग

(ग) 1. जगन ✗ 2. संघर्ष ✗ 3. राही ✗
4. मंगल ✗ 5. सागर ✗

(घ) 1. खंडहर 2. हृदय 3. संघर्ष
4. पृथ्वी 5. लघुता 6. व्यर्थ

रचनात्मक ज्ञान–

(क) जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए मैं मेहनत पर भरोसा करूँगी क्योंकि भगवान ने हमें बुद्धि तथा हाथ-पैर इसलिए ही दिए है ताकि हम उनका प्रयोग कर इच्छाओं की पूर्ति कर पाएँ और दूसरों की भी सेवा कर पाएँ। अगर हम यह सोचें कि प्यास लगने पर कुएँ में से पानी अपने-आप हम तक आए, तो वह नहीं पहुँचेगा। अगर मुझे प्यास लगी है तो तो मुझे स्वयं उठकर कुएँ के पास जाना पड़ेगा तथा पानी निकालकर पीना पड़ेगा।

* विद्यार्थियों को अपने विचार प्रकट करने के लिए प्रेरित करें।

(ख) प्रस्तुत कवित 'वरदान माँगूँगा नहीं' शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा रचित एक प्रेरक कविता है। इस कविता के द्वारा कवि कहते हैं कि यह जीवन युद्ध की तरह है। इस महा-संग्राम में किसी से भीख माँगने की अपेक्षा वह मरना पसंद करेंगे। वह वरदान की जगह स्वाभिमान के बल पर इस जीवन संग्राम का सामना करना पसंद करेंगे। वे कहते हैं कि उन्हें हार-जीत से कोई फ़र्क नहीं पड़ता। कर्तव्य पथ पर मैं निरंतर चलता जाऊँगा। मुझे मेरी खुशी और दुख के बदले विश्व भर की धन-संपदा मिले तो भी मैं धन की इच्छा नहीं करूँगा।

* विद्यार्थियों को कविता का भावार्थ स्वयं प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें।

(ग) ''हार एक विराम है।'' मैं कवि के इस कथन से सहमत हूँ क्योंकि अगर किसी कार्य को करते समय हमें सफलता नहीं मिलती तो हम उस कार्य को करना छोड़ देते हैं जिसके कारण उस कार्य पर एक विराम लग जाता है। जैसे आपने किसी प्रतियोगिता में भाग लिया तथा अगर हम उसमें सफल नहीं हुए तो हम दोबारा उस प्रतियोगिता में भाग ही नहीं लेते, यहाँ 'हार' ने हमारे 'परिश्रम' पर विराम लगा दिया। जीवन में हम कई कार्यों को करते समय हार जाते हैं इसका मतलब यह नहीं कि हम उस कार्य को करने का दोबारा प्रयास ही न करें। हमें हार या जीत पर ध्यान न देकर केवल परिश्रम करते रहना चाहिए। हार मानकर कार्य को विराम नहीं देना चाहिए।

* विद्यार्थियों को अपने विचार स्वयं रखने के लिए प्रेरित करें।

YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.
EDUCATIONAL PUBLISHER

Regd. Off. : F-214, Laxmi Nagar, Delhi-110 092
Tel. : 91-11-4758 6784, 91-97116 18765
E-mail : yellowbirdpublications@gmail.com • info@yellowbirdpublications.com
Website : www.yellowbirdpublications.com